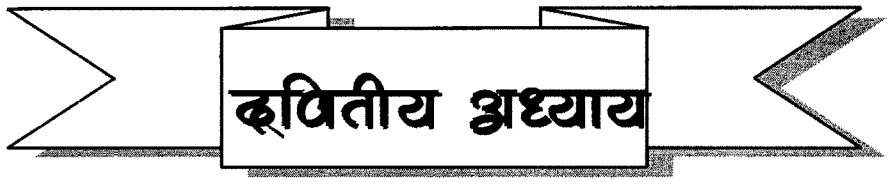

द्वितीय अध्याय

मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास : वस्तुपरक अध्ययन

द्वितीय अध्याय

"मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास : वस्तुपरक अध्ययन"

2.1. प्रस्तावना :-

मोहनदास नैमिशराय आधुनिक युग के दलित साहित्यकारों में से एक हैं | उनके साहित्य द्वारा दलित एवं निम्न वर्ग की विविध समस्याएँ समाज के सामने प्रस्तुत हुई हैं | उन्होंने समाज में व्याप्त परंपरागत रूढ़ि, जातिभेद, छुआछूत, शोषित दलितों एवं पीड़ितों का यथार्थ चित्रण किया है | उन्होंने गुलामी की परंपरा, रूढ़िग्रस्त दलित, जातिवादिता, शिक्षा व्यवस्था, अवैध व्यवहार, दलितों के कर्तव्य का निर्वाह का चित्रण किया है | मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना तथा जटिल प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति इनके साहित्य की मूल विशेषताएँ हैं |

मोहनदास नैमिशराय जी ने डॉ. अम्बेडकर जी के विचारों को स्पष्ट करते हुए दलितों को प्रेरित किया है | भारतीय समाज व्यवस्था वर्णव्यवस्था के आधार पर है | जो सारे विश्व में उसका मजाक उड़ाया जा रहा है | दलितों की समस्याओं की अनुभूती तब होती है, जब हम मोहनदास नैमिशराय जी के साहित्य को पढ़ते हैं | उनका साहित्य बताता है कि दलितों की जिंदगी जानवरों से भी गई-बीती है | मोहनदास नैमिशराय का साहित्य हमें चीख-चीख कर बता देता है कि मनुष्य के साथ मनुष्य जैसा व्यवहार न होकर जानवरों से भी बदतर पेश आनेवाले लोग मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है | मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने साहित्य से दलित जीवन की यथार्थता को स्पष्ट किया है | आजादी के पूर्व दलित समाज भयावह जीवन व्यतीत कर रहा था | देश आजाद होने पर भी सवर्ण दलितों को स्वतंत्रता देना नहीं चाहते थे | मोहनदास नैमिशराय जी ने अपने उपन्यास से दलित समस्याएँ एवं उनमें उभरती नवचेतना को प्रस्तुत किया है | उनके उपन्यास में दलित पात्र सवर्णों की जिन क्रूरताओं से गुजरते हैं वे जितनी भयावह यातना भोगते हैं वे दिल दहला देती हैं | सवर्णों में स्थित मानवीयता में दलितों के लिए कोई स्थान नहीं है | उनकी मानवीयता दलितों को छोड़कर ही चलती रही है | मोहनदास नैमिशराय जी ने इसे अपने उपन्यासों के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है |

मुक्तिपर्व

2.1.1. मुक्तिपर्व - शीर्षक का अर्थ :-

हम मुक्तिपर्व किसे कहे.....? जब देश आजाद हुआ उसे या जब किसी जाति या कुछ जातियों को आजादी मिली उसे | मुक्ति से आखिर तात्पर्य क्या है, एक आदमी की मुक्ति या एक विशेष जाति की .....? यह सवाल पाठकों के मन में बार-बार उठेगा | यही सवाल आजादी के बाद से लेकर अब तक दलितों के भीतर उठता रहा है, जो उनकी भावनाओं को समय-समय पर उद्वेलित करता रहा है | उपन्यास का कथानक भी इसी तरह के विषय के आसपास घूमता है | अब आजादी मिलने के बाद भी दलितों को न्याय नहीं मिल पाता है | तब वे यह सोचने के लिए मजबूर होते हैं कि यह आजादी आखिर किसके लिए ? उनका मुक्तिपर्व कब आएगा ? तात्पर्य 'मुक्तिपर्व'अर्थात किसी जाति, समाज, संप्रदाय, धर्म, अन्याय-अत्याचार से मुक्ति जब सर्वसामान्य तथा विशेषत: दलित इन से मुक्त होगा उस समय उसके लिए वह पर्व ही होगा |

2.1.2. कथानक की दृष्टि :-

'मुक्तिपर्व' उपन्यास संघर्षशील दलित परिवार की एक ऐसी कहानी है जिसमें भारतीय समाज की विषमता से पूर्ण परिस्थितियों में अपने द्वंद्वों के साथ मुख्य पात्र अपने आत्मविश्वास के साथ जीना सिखते है | अपनी अस्मिता और पहचान से रूबरू होने का बेबाक स्वभाव सुनीत को अपने परिवार से मिलता है | जैसे-जैसे आजादी का सूरज निकलता है वैसे वैसे दलितों के भीतर आत्मविश्वास बढता है | जहाँ एक तरफ उनके बीच हर्षोल्लास होता हैं वहीं दूसरी ओर नवाबों तथा जमींदारों में कुंठाएँ जन्म लेती है | वे दलितों को वैसे ही गुलाम समझने की खुशगहमी रखते हैं | उन्हें देश और समाज को मिली आजादी सुख देती नहीं, क्योंकि दलित अब अपने वजूद को पहचानने लगे थे | कथानक की दृष्टि से उपन्यास में बहुत उलझाव नहीं है बल्कि शिक्षा के माध्यम से समस्याओं को हल करने का प्रयास किया गया है | जो बाबासाहेब डॉ.

अम्बेड़कर जी का गुलामी से मुक्ति हेतु मूलमंत्र है | 'मुक्तिपर्व' उपन्यास की कहानी डॉ. अम्बेड़कर जी के इसी दर्शन को लेकर आगे बढती है |

2.1.3. मुक्तिपर्व : वस्तुपरक अध्ययन :-

विवेच्य उपन्यास का वस्तुपरक अध्ययन इस तरह से हैं | आजादी की लड़ाई का यह अंतिम चरण था | शहर में अंग्रेजी सेना और क्रांतिकारियों की मुठभेड़ हुई थी | जमीन का चप्पा-चप्पा आतंकित था | बच्चे खेलने की सुध भूल गये थे | महिलाएँ किवाड़ों की दरारों में से झाँक कर बाहर का जायजा लेती थी | इस शहर में दलित भी असमंजस थे | उन्हें विरासत में दोहरी गुलामी मिली थी | आखिर उनके दुश्मन कौन हैं ? किसे मार गिराए वे, जिससे उन्हें भी गुलामी से छुटकारा मिल जाए | देश के मालिक अंग्रेज थे, पर उनके मालिक नवाब, जमींदार, काश्तकार थे | उनकी हवेली और खेतों पर उन्हें दस-दस, बारह-बारह घंटे मेहनत करनी पड़ती थी | तव जाकर उनके परिवार को रोटी नसीब होती थी | वे गुलाम न थे, पर गुलामों की तरह उन्हें रखा जाता था | उनके अपने सुख-दुख से मालिकों का कोई रिश्ता न था | उनका काम था केवल मालिकों का हुक्म बजाना | वे हुक्म के तावेदार थे | इसी तावेदारी में जरा-सी भी कहीं कमी रह जाती तो मालिकों की भौंहे तुरंत चढ़ जाती थी | इधर उनकी भौंह चढ़ी नहीं कि उनपर कहर टूटा | मालिकों के हाथ चलते थे या लातें पड़तीं | उन्हें वे जूती के नोक पर रखते थे | समाज में परंपरा ही कुछ ऐसी थी | दलितों के हक में गालियाँ थी या फिर हंटर | विकृत संस्कृति हो गई थी उनकी, तभी तो विकृत होकर कमेरों को वे मारते-पिटते थे | उनकी संस्कृति में दया नहीं थी, केवल जुल्म था | पीढ़ी-दर-पीढ़ी दलितों ने जुल्म सहा था | समाज में उन कमेरों की गिनती ढ़ेढ़ - चमारों के रूप में होती थी | अक्षर ज्ञान से उन्हें महरूम रखा गया था | पर कुछ ऐसे लोगों ने अक्षर ज्ञान से रिश्ता बना लिया था जिनकी शिक्षा के प्रति ललक बढ़ी थी | उनके पाँव स्कूल की दिशा में दौड़ते थे और आँखें किताबों को तलाश करती थी |

बंसी नवाब अली वर्दी खां की हवेली पर दो बरस से नौकर था | बंसी नवाब साहब की हवेली पर पूरे दो घंटे देरी से पहुँचा था | नवाब की तबीयत थोड़ी खराब थी | नवाब

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अलवर्दी खां उसके समय पर न आने के कारण गुस्से में बड़बड़ा रहे थे | "अभी तो आजादी भी नहीं आयी है | आजादी आने पर ये साले क्या करेंगे |"[1] बंसी आने पर नवाब साहब ने उस पर पूरा गुस्सा उतारा था | नवाब साहब के मुँह के भीतर की खकार बाहर निकलने को हो रही थी | नवाब साहब को लग रहा था कि अब उल्टी आयेगी | नवाब साहब बंसी पर गरजे थे कि ला हथेली कर इधर | बंसी मरता क्या नहीं करता | बंसी के लिए तो मुँह से निकले नवाब साहब के एक-एक शब्द की तामील करना था | वह भागकर बैठकखाने में आया और जैसे ही बंसी ने उनकी तरफ हथेली की नवाब साहब ने उसपर अंदर का बलगम थूक दिया | ढ़ेर सारी खकार बंसी की हथेली पर उगल दी गई थी | नवाब साहब के लिए वही उगालदान था और वही पीकदान | बंसी की आँखों में आँसू भर आये थे, पर मुँह से उफ तक नहीं की थी उसने | वैसे ही हथेली पर बलगम लिए वह बैठकखाने के बाहर आ गया था | उसके भीतर अँधड़ तूफान था | बाहर से वह बिल्कुल सहज |

पूरे शहर में आजादी मिलने की चर्चा थी | लोग आजादी का सूरज देखने के लिए अपने-अपने घरों की छतों पर आ गए थे | कुछ मुँड़ेर पर खड़े थे | आज आजादी की पहली सुबह थी | ऐसी सुबह जिसके लिए अँधेरे का कोई अर्थ नहीं था | बस्ती के लोगों को लग रहा था जैसे सूरज उनके नजदीक और नजदीक दौड़ा चला आ रहा हो | उनके भीतर खून का रंग था | वही खून का रंग दलितों को उत्तेजित कर रहा था | प्रसिद्ध शायर मिर्झा ग़ालीब ने दलितों को अन्याय के विरूद्ध लड़ने की हिम्मत देते हुए कहा था,

"है बहुत आंधियार अब सूरज निकलना चाहिए
जिस तरह से भी हो ये मौसम बदलना चाहिए
छीनता हो जब तुम्हारा हक़ कोई
उस वक्त तो
आँख से आँसू नहीं शोला

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र.22

निकलना चाहिए |"[1]

अर्थात मिर्झा गालीब को भी दलितों से क्रांति की अपेक्षा थी | नवाब साहब, जमींदार, जागिरदार, दलित सब स्वतंत्र हो गए थे | पर उच्चवर्गी दलितों को स्वातंत्र्य नहीं देना चाहते थे | वे दलितों को गुलाम ही बनाकर रखना चाहते थे | नवाब साहब बंसी को कहता है कि तुम गुलाम थे, गुलाम हो और गुलाम रहोगे | देश स्वतंत्र होने से बंसी में भी चेतना जागृत हो गयी थी | वह गुस्से में भडकते हुए बोला कि जनाबे अली, हम न गुलाम थे, न गुलाम है और न गुलाम रहेंगे | बरस-दर-बरस वह तथा उसकी जाति के लोग गुलामी तो भोगते आए थे | लेकिन बंसी ने गुलामी ठुकरा दी थी | बरसों की गुलामी की जंजीरें कैसे एक झटके के साथ टूट गयी थी | बंसी को न इतिहास की जानकारी थी और न राजनीति की समझ | पर उसे अपनी जाति के जख्मों का ज्ञान अवश्य ही था | आज नवाब साहब के व्यवहार ने उसके जख्मों को फिर से कुरेद दिया था | यह उसके अकेले की कहानी नहीं थी | बंसी में हर एक के भीतरी जख्म थे, जो हिंदुओं ने भी दिए थे और मुसलमानों ने भी | वे दोनों के लिए गुलाम बन कर रह गए थे | उनकी अस्मिता को तार-तार करना उनका पैदाइशी हक था | उनपर जब जाति का जुनून चढ़ता तो वे आदमी को जानवरों की पंक्ति में खड़ा कर देते |

बंसी के घर में बेटे के जन्म से खुशी का माहौल था | पंडित का काम था जन्म लेनेवाले बच्चे का नामकरण कराना | आज पहली बार पंड़ित दलित बस्ती से निराश लौटा था | उसके ज्ञान पर प्रश्नचिह्न लगा था | ऐसा क्यों हुआ ? आज तक तो ऐसी स्थिति नहीं आई थी | उसके भीतर सवाल-दर-सवाल उभरने लगे थे | बचना चाहते हुए भी वह सवालों से बच नहीं पा रहा था | पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका दबदबा टूट गया था | धर्म की बिसात उलट गयी थी | इसलिए कि आज एक पंड़ित बाजी हार गया था और दलित जीत गया था | पंड़ित ने नाम सुझाया था, 'बुद्धू' ..... | बस इसी पर बंसी बुरा मान गया था | उसके जीवन में उसके और साथी दलित बस्तियों में होनेवाले बच्चों के ऐसे ही नाम सुझाते रहे थे, जिन्हें दलित खुशी-खुशी मानते रहे थे | आज अचानक क्या हो गया | उसकी समझ में नहीं आ रहा था | बंसी ने बच्चे का नाम रखा था

1 . संपादक - 'मोहनदास नैमिशराय', बयान, अंक - 11, जून 2007, पृष्ठ क्र . 12

सुनीत | पंड़ित केशवप्रसाद ने जाते-जाते सुना था, बंसी कह रहा था कि आज के बाद इस बस्ती में किसी पंड़ित की जरूरत नहीं पड़ेगी |

आजादी के बाद दलितों की अस्मिता और पहचान पुन: उभरने लगी थी | बस्ती के लोग अब सवाल और जवाब के फर्क को भी महसूस करने लगे थे | उनके हिस्से में केवल जवाब ही नहीं थे | वे सवाल करना भी सीख गए थे | जहॉ आजादी के कमेरों को उर्जा दी वहीं मुक्तखोरों को जैसे खस्सी कर दिया था | उनके लिए गुलाम देश ही अच्छा था | इसलिए कि वे गुलामों की फौज बनाए रखना चाहते थे | गुलाम रहेंगे तो उनकी औरतों के साथ रंगरेलियाँ मनाते रहेंगे | नवाब साहब बंसी के घर बच्चे की जन्म की बात सुनकर आकर कहने लगे, "अरे बंसी, पता चला कि तेरे घर बच्चा हुआ है | इसलिए चला आया | और फिर तुम तो हमारे ही आदमी हो | अब हमारे घर चाकरी नहीं करते तो क्या हुआ, इसे तो हमारी हवेली पर काम करने भेजना |"[1] बंसी ने सुना तो बिना एक पल की देरी किए हुए वह बोला कि नवाब साहब, न अब मैं किसी की गुलामी करूँगा और न मेरा बच्चा | मुझे गुलाम बने रहने की आदत नहीं नवाब साहब | वैसे भी देश अब आजाद हो गया है | अब न कोई किसी का गुलाम है और न कोई किसी का मालिक | सब एक बराबर है |[1]

बस्ती में स्कूल खुलने की सूचना रामलाल ने दी | बस्ती के जिस व्यक्ति ने भी सुना तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था | स्कूल का पूरा बजट पास हो गया है | सभी कुछ तैयार है, बस देरी इस बात की है कि कोई भी अध्यापक बस्ती में पढ़ाने को तैयार नहीं होता | वे सभी अध्यापक सवर्ण थे | जो सरस्वती वंदना करते थे | माथे पर तिलक लगाते थे, जनेऊ पहनते थे, चोटी करते थे, गाय को माता कहते थे, सर्प को दूध पिलाते थे, कुत्तों को अपनी गोद में बिठाते थे, पर दलितों की परछाई से भी दूर रहते थे | उन्हें जानवरों, कीड़ों-मकोड़ों से प्रेम था, पर दलितों से वे घृणा करते थे | आखिर उनकी नानवता का दर्शन क्या था, कुछ समझ में नहीं आता था | वे ढ़ोंगी थे, पाखंड़ की केंचुली पहन समाज में अपना धार्मिक कारोबार चलाते थे | लगभग एक साल को भागदौड़ के बाद रामलाल जी स्कूल खुलवाने में सफल हो ही गए |

---

1 . मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र.38

कुछ ही दिनों में एक मास्टर की भी व्यवस्था हो गई | बस्ती के लोगों का शिक्षा के प्रति अनुराग बढ़ने लगा था |

शहर में मस्जिद भी थी और मंदिर भी | एक में लोग खुदा को याद करते, दूसरे में भगवान को | दलित किसको याद करें | बंसी को समझ नहीं आता था | वह बार-बार अपने-आपको सवाल करता | क्या हमारे हिस्से में देवी-देवता नहीं हैं | हम किसकी पूजा करें, न मंदिरों में उनके लिए प्रवेश है और न मस्जिदों में | क्या वे इन्सान नहीं | उन्होंने आखिर कौन-सी गलती की है, उन्हें मंदिर प्रवेश की इजाजत क्यों नहीं है | जब कभी भी उसे वक्त मिलता वह इसी तरह की बातें सोचता | सुनीत ने जब से स्कूल जाना शुरू किया उसके भीतर प्रौढ़ता उछाल मारने लगी थी | समाज के यथार्थ और किताबों के पन्नों पर छपे चित्रों में विरोधाभास था | जो उसने बहुत जल्द जान लिया था | उसकी आँखें कभी किताब पर होती तो कभी समाज पर | किताबों में तो ऐसा चित्र न था | प्याऊ पर बैठा आदमी भी वैसा ही था | माथे पर तिलक भी किताब में दिए गए तिलक जैसा और गले में जनेऊ तथा सिर के बीचों-बीच चोटी भी वैसी ही थी, पर पानी के लोटे के साथ नलकी न थी | किताब में नलकी क्यों नहीं | मास्टर जी क्या झूठ बोलते हैं, किसने लिखी यह किताब, किसने बनाए अधूरे चित्र ?

बंसी और सुनीत को प्याऊवाले ने नलकी से पानी पिलाया | सुनीत का स्वर नाराजी से भरा था | दिन का समय था | सभी बच्चे इकट्ठे होकर प्याऊ पर गए थे | आगे-आगे मास्टर जी थे और पीछे-पीछे बच्चे | उनमें लड़के भी थे और लड़कियाँ भी | बस्ती के आठ-दस आदमी भी पीछे-पीछे चले | उन सभी में अन्याय और विषमता के खिलाफ लड़ने की भावना जोर मार रही थी | हालाँकि कई बार बस्ती के लोगों ने पंड़ित जी को नलकी से पानी पिलाने के बारे में टोका था | पुलिस चौकी में भी शिकायत की थी | पर बीच-बीच में पंड़ित नलकी से पानी पिलाना बंद कर देता और चार-छ: दिन बाद पुन: उसी नलकी से दलितों को पानी पिलाना शुरू कर देता | पंड़ित के भीतर विषमता भरी थी इसलिए उसका व्यवहार भी ऐसा ही था | नजदीक ही प्याऊ था | पंड़ित जी माथे पर लंबा-चौडा तिलक लगाए बैठे थे | उसके गले में जनेऊ पडा था तथा उसके नीचे रबर की नलकी लटकी थी | नलकी से पानी इस तरह नीचे गिरता था कि प्यासा

आदमी अपनी दोनों हथेलियाँ उसके नीचे कर पानी पीता था | उपर नलकी की चौड़ाई अधिक थी | जिससे स्वयं प्याऊ पर बैठा व्यक्ति ही पानी उँड़ेलता था | एक बात और यह थी कि नलकी से पानी पीनेवाला जब पानी पीता था तो उसके छींटे प्याऊ की हद से बाहर आते थे |

प्याऊ पर बैठे तिलकधारी तथा जनेऊधारी व्यक्ति ने भीड़ को उधर ही आते देखा, पर उनके आने का कारण (मतलब) समझ न सका | पर तभी उनकी दृष्टि सुनीत पर गई, फिर बस्ती के लोगों पर और बाद में मास्टर जी पर | वह इन सभी को पहचानता था | चूँकि मास्टर जी के बाद सुनीत ही सबसे आगे था, इसलिए उसने नलकी से पानी उँड़ेलते हुए कहा- "लो बच्चों, पानी पी लो |"[1] सभी नलकी को देख गुस्से में थे | सुनीत ने आगे बढ़ते हुए नलकी को खींच कर नीचे ड़ाल दिया | उसके इस व्यवहार से पंड़ित जी हतप्रभ रह गए | वे सोच भी नहीं सकते थे कि एक छोटा-सा बच्चा पानी की नलकी को खींच कर इस तरह से फेंक देगा | सुनीत ने कहा कि पंड़ित जी, हम ढ़ेढ़ चमार हैं, पर अब देश आजाद है | इतना समझ लो तुम्हें ऐसा करने पर जेल जाना भी पड़ सकता है | बच्चों ने इस शर्त पर पानी पिया कि पंड़ित जी सभी के सामने कान पकड़कर माफी माँगे और आगे से सभी को एक ही बर्तन से पानी पिलाने का विश्वास दें पंड़ित जो ने मजबूर होकर वैसा ही किया | सभी ने खुशी-खुशी पानी पिया |

बस्ती के चार बच्चों ने पाँचवी की बोर्ड़ की परीक्षा पास कर ली थी | सुनीत के सबसे अधिक नम्बर आए थे | पाँचवी की बोर्ड की परीक्षा पास होने पर बस्ती से थोड़ी दूरी पर ही ज्यूनियर हाई स्कूल में सुनीत को दाखिला लेना था | जब सुनीत का नम्बर आया तो अध्यापक पाण्ड़े ने पुछा कि कौन से स्कूल से आए हो ? सुनीत ने कहा कि निकेतन प्राइमरी स्कूल से | निकेतन प्राइमरी स्कूल का नाम सुनकर वह व्यक्ति थोड़ा चौंकन्ना हुआ और उसकी ओर देखते हुए बोला कि समझ गया बच्चू समझ गया, चमारों के स्कूल से आए हो यहीं ना | हाइ स्कूल में प्रवेश के बाद बंसी इसी चिंता से जूझता रहा कि सुनीत को किताब-कापियाँ, स्कूल की ड्रेस, जूते, मौजे इस सबका इंतजाम करना है | लेकिन दो दिन में सब सामान खरीदा गया था | अध्यापक पाण्ड़े ब्राह्मण था | वह सुनीत का उपहास करता है | पूरी कक्षा में लड़के हँस रहे थे | कक्षा के

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र. 53

अध्यापक हँस रहे थे | वह चुप था, बिल्कुल मौन | उसे दु:ख हुआ, असीम दु:ख | सुमित्रा सुनीत की सहपाठी थी | वह उसे तसल्ली देती है | "नहीं, सुनीत, ऐसा नहीं है | कोई भी व्यक्ति जाति से छोटा-बड़ा नहीं होता | वह तो अपने कर्मों से छोटा-बड़ा होता है |"[1]

आजादी के बाद भी क्यों लोग जातियों की बात करते हैं | एक-दूसरे को छोटा वडा समझते हैं | जात-पाँत, छुआछूत का आखिर अंत कब होगा | वह स्वयं से ही सवाल करता पर उन्हें क्या अधिकार हैं हमारे जख्मों को कुरेदने का | हम कोई भीख माँगने तो नहीं जाते उनके घरों पर | उल्टे उन्हीं की जाति के लोग स्वयं लाल-पीले कपड़े पहनकर घर-घर जाकर भीख माँगते फिरते हैं | लेकिन वे दलितों की अस्मिता को तार-तार कर देते थे | दलित समाज के लोग आखिर कब तक यह सब सहते रहेंगे ? उसका वजूद भी तो दहकने लगा धा | उसकी जाति के लोग कब त्क इन चोटों को सहन करते रहेंगे ?

सुनीत और सुमित्रा कक्षा में एक साथ बैठने लगे थे | वे दोनों स्कूल का काम करने में एक दूसरे की मदद लेते | सुनीत मास्टर जी की बात का जवाव अपने तरीके से देना चाहता था | इसी धुन में वह उसी दिन से लग गया था | उसके सिर पर अधिक से अधिक पढ़ाई करने का जुनून था | उनके कच्चे घर में लाइट कनेक्शन नहीं था, इसलिए सुनीत बाहर गली के किनारे पर लगे लैम्प पोस्ट के उजाले में पढ़ता था | वह वहीं खड़े होकर पढ़ता और जब थक जाता तो वहीं नीचे जमीन पर बैठ जाता | वह रात-दिन पढ़ता था | सच बात तो यह है कि सुनीत मेहनत इसलिए ही कर रहा था कि उनकी जाति का सिर ऊँचा हो, उनके मान-सम्मान को जो अब तक आघात लगा हैं, उनसे उबर कर वे आगे आए | वंसी ने डॉ. अम्बेड़कर जी की दबी हुई कहानी सुनीत को लाकर दी थी, जो एक ही बैठक में उसने पढ़ ड़ाली थी | पढ़ने के बाद सुनीत बार-बार यह सोचता कि जब बाबासाहेब अम्बेड़कर इतनी गरीबी में पढ़ सकते हैं तो वह क्यों नहीं पढ़ सकता | अम्बेड़कर ने तो सारे दलित समाज का सिर ऊँचा किया था | उन्हें गुलामी से छुटकारा दिलाया धा | उन्हें एहसास दिलाया था कि, वे गुलाम नहीं हैं | उन्हें गुलामी की ओढ़ी चादर उतारकर फेंक देनी चाहिए | इसी संदर्भ में मनेज अबोध का कहना सही लगता है -

1. मोहनदास नैमिशराय -मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र. 62

"युग परिवर्तन खाली नारों से कब हो पाया
एक लड़ाई लड़नी होंगी अधिकारों के साथ
मौसम के तीखे तेवर से बचना चाहो तो
अब सोने की आदत ड़ालो अंगारों के साथ |"[1]

सुनीत मैरिट के आधार पर स्कॉलरशिप के लिए फार्म भरना चाहता है | फार्म पर कक्षा-अध्यापक के हस्ताक्षर चाहिए थे | लेकिन पिछड़ी जाति का सुनीत स्कॉलरशिप फार्म भरने पर पाण्ड़े उखड़ जाता था | उसे यह पसंद नहीं था कि सुनीत मैरिट के आधार पर स्कॉलरशिप का फार्म भरें | थोड़ी-सी नाराजगी के स्वर में वे बोले, मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि जब सरकार ने तुम लोगों के लिए अलग से स्कॉलरशिप देने की योजना बनाई है तो तुम वही फार्म क्यों नहीं भर रहे हो ? उन्हें इस बात का एतराज था कि जाति के आधार पर स्कॉलरशिप का फार्म न भरकर योग्यता के आधार पर भरें | वह सुनीत के फार्म पर हस्ताक्षर करने को टाल रहा था | कभी कहता कि समय नहीं है, तो कभी उस पर क्रोधित होता और कहता कि तुम लोगों को सब्र भी नहीं हैं | वह फार्म भरने के अंतिम दिन तक हस्ताक्षर नहीं देता तो सुनीत हैड़-मास्टर के पास जाकर सच्चाई बताता है | हैड़-मास्टर दुखी हो जाते है कि एक मास्टर ऐसा व्यवहार करें | वह उसका फार्म रख लेते हैं और हस्ताक्षर कर लेने का आश्वासन देते हैं |

दलित समाज के लोग जहाँ भी थे, हाशिये पर थे | गाँव हो या शहर उनकी बस्तियाँ शेष समाज से अलग-अलग होती धी | उनके घर अलग से पहचाने जाते थे | उनका व्यवसाय दूसरें लोगों से अलग था | वे जितना अपने आपको ढ़ोते उतनी ही गुलामी को भी ढ़ोते थे | इसलिए उनके भीतर जैसे घाव होते वैसे ही बाहर भी दिखाई देते | वे अपने घावों का जितना भी इलाज करते, नए घाव उतने ही हो जाते | उन्हें इतिहास से काटकर रख दिया गया था | अब वर्तमान से भी काटने का प्रयास हो रहा था, पर इतिहास से काटकर अलग रख देने में जितनी

---

1. संपादक - 'मोहनदास नैमिशराय' - बयान, अंक - 11, जून 2007, पृष्ठ क्र. 14

सफलता मिली, उतना वर्तमान से काटने में स्फलता नहीं मिल पा रही थी | अब वे न दीन थे न हीन, बल्कि जुझारू बन रहे थे | उनके भीतर का दर्द बाहर आता तो वे अपने आप से ही सवाल-जवाब करते |

बस्ती में भी ऐसे सवाल उभरने लगे थे | वे सवाल अस्मिता और पहचान के थे उन सवालों से स्वाभिमान का बोध होता था | सवाल करनेवालों के भीतर विश्वास था | बस्ती में सबसे पहले बंसी ने गुलामी छोड़ी फिर बाद में एक-एक करके अन्य लोगों ने जैसे-जैसे उन्हें गुलामी का एहसास हो रहा था वैसे-वैसे वे नवाबों/रइसों के यहाँ से अपने-अपने काम धंधें छोड़ रहे थे | पुरूषों की देखादेखी औरतें भी जमींदारों तथा काश्तकारों के घरों तथा खेतों से अपनी-अपनी मजदूरी छोड़ रही थीं | उनके भीतर भी चेतना का सूरज उगने लगा था | जो उनके विचारों को प्रखर बना रहा था | वे अब अबला नहीं रही थी, बल्कि सबला बन रही थी | वे शिक्षा का मोल समझने लगी थी और अपने-अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने के लिए भेज रही थी |

बस्ती में विद्रोह और सुधर की प्रक्रिया साथ-साथ चल रही थी | जिससे रचनात्मक परिवर्तन का जन्म हुआ था | वह परिवर्तन नयी पीढ़ी को अधिक रास आया था | पुरानी पीढ़ी के लोग अभी भी परंपराओं को सीने से चिपकाए हुए थे | उनके लिए परंपराएँ ही समाज के नियम थे | हालाँकि आजाद भारत के संविधान ने समाज विरोधी उन नियमों को समाप्त करने की मुहिम चलाई थी | दलितों के लिए डॉ.बाबासाहेब अम्बेड़कर जी ने नए जीवन का संचार किया था | उन्हीं सपनों को साकार करने का प्रयास किया जा रहा था और आज इसी लिए बस्ती के लोगों की पंचायत हुई थी | पंचायत में महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए थे | पहला तो यह कि, डॉ.बाबासाहेब अम्बेड़कर जी के नाम पर बस्ती में पुस्तकालय शुरू किया जाए | दूसरा यह कि कलाल-खाने से जुड़ी जगह को कब्जे में लिया जाए | उससे प्रेरित होकर स्त्री-पुरूषों में कलालखाने के भीतर जाकर शराब की बोतलें तोड़ ड़ालीं | बाद में पुलिस के आने पर संघर्ष भी हुआ | कई लोगों को चोटें भी आयी | बस्ती के लोगों का किसी सामाजिक बुराई को दूर करने के लिए यह पहला आंदोलन था | जिसमें उन्हें सफलता मिली थी | कलालखाना बंद हो गया था | बाद में कलालखाने की जगह पर स्कूल खुला गया | इस चेतना के परिवर्तन को देखकर शरणकुमार

लिंबाले का कहना सही लगता हैं, "दलितों को संगठित होना चाहिए, संगठित होकर ही अन्याय का मुकाबला किया जा सकता है, संघर्ष के बिना स्वाभिमान पैदा नहीं हो सकता |"[१]

अंतत: सुनीत की मेहनत रंग लायी | वह वार्षिक परीक्षा में भी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ | यही नहीं अपने सेक्शन में उसका नंबर दूसरा था | रिजल्ट कार्ड मिले तो सबसे पहले सुनीत ने कक्षा अध्यापक पाण्ड़े को धन्यावाद दिया | लेकिन सुनीत को महसुस हुआ कि पाण्ड़े को उसका प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना जैसे अच्छा नहीं लगा था | उनके चेहरे पर खुशी के चिह्न नहीं थे बल्कि ईर्ष्या की लकीरें थी | और चेहरे पर अजीब-सा खिंचाव था | पहले पीरियड़ में पाण्ड़े हिंदी पढ़ाते थे | हिंदी में सुनीत को सबसे कम अंक मिले थे | हालाँकि उस विषय में उसने बहुत अधिक मेहनत की थी | अधिक मेहनत करने का कारण था कि पाण्ड़े उसे हिंदी में फेल कर देगा | हिंदी में अधिक मेहनत करने की सीख उसे स्वयं उसके पिता ने दी थी और अध्यापक पाण्ड़े से सावधान रहने को कहा था | दुश्मन चाहे आम आदमी हो या खास आदमी | सवर्ण कभी भी नहीं चाहते कि हमारे बच्चे पढ़े-लिखें | क्योंकि अगर वे पढ़-लिख गए तो उन्हें गुलामों की फौज कहाँ से मिलेगी | उनकी सेवा-टहल फिर कौन करेगा | उनके जानवरों को चारा कौन खिलाएगा, पानी कौन पिलाएगा | उनके बदन की मालिश कौन करेगा | उनकी मक्कारी से हमें बचकर रहना हैं |

करतारा के बेटे उछाल को स्कूल में दाखिला देने से पाण्ड़े मुखर रहा था | परंतु सुनीत हैड़-मास्टर की सहायता से उसका दाखिला कर देता है | उछाल को स्कूल में दाखिला देकर ज्यूनियर हाई स्कूल के मास्टर ही उछल गए थे, तब उनके पास पाँच-छ: अध्यापक आ धमके और सीधे-सीधे इस्तीफा देने की बात भी कह ड़ाली | उनके आक्रोश का कारण था उछाल, उनके अनुसार जिसे दाखिला देकर अच्छा नहीं किया | पाण्ड़े ने साफ-साफ कह दिया था- हैड़ मास्टर साहब, यह स्कूल कोई भंगी-चमारों का स्कूल नहीं है जो चाहे गिरे-पड़े किसी को भी दाखिला दे दो | वह कट्टर सनातनी थे | वे सरकार का आदेश मानने के लिए तैयार नहीं थे, बल्कि सरकार को ही कोसने लगे | हैड़ मास्टर पर जाति के नाम पर सारा गर्द-गुब्बार उड़ाकर अध्यापक मंड़ली

---

1. शरणकुमार लिंबाले - दलित ब्राह्मण, पृष्ठ क्र. 92

चली गयी थी | हालाँकि पूरे शहर में ही जाति की बेल फलने-फूलने लगी थी | शिक्षा-संस्थानों में सरस्वती वंदना करनेवाले अध्यापक जातियों की दीवारों को गिरा नहीं रहे थे वल्कि शिक्षा भावना और नैतिकता के विपरित वे जाति-विषमता की दीवारों को और ऊँचा उठाने की मुहीम में लगे थे |

वोर्ड की परीक्षा में प्रथम श्रेणी मिलने पर सुनीत ने गंगाराम हाई स्कूल में एड़मीशन ले लिया था | सुनीत ने सोचा था नया स्कूल है | नए परिवेश में न परंपराएँ होगी और न परंपरावादी लोग | उनकी रूढ़ियाँ खत्म हो गई होंगी, पर उसे क्या पता था कि यहाँ तो नए सिरे से रूढ़ियों को उगाने का प्रयास किया जा रहा है | इस स्कूल में छुपी वर्ण व्यवस्था की भी परत-दर-परत उखड़ने लगी थी | हालाँकि इस स्कूल में न कोई पाण्डे थे और न पण्ड़ा मास्टर जी थे | पर स्कूल में जितने अध्यापक थे, उनमें अधिकांश द्रोणाचार्य के ही वंशज थे, जिनकी एकलव्य को शिष्य वनाने में रूचि नहीं थी, वल्कि उसका अँगूठा कटवाने में दिलचस्पी थी | नौवीं कक्षा के अध्यापक का नाम था शिवानंद शर्मा | उन्होंने स्कूल के अहाते में स्थित शिव मंदिर बनवा लिया था | वे मास्टर कम और पुजारी अधिक थे | वे स्कूल के नजदीक ही प्रधानाचार्य निवास में रहते थे | नजदीक रहने में उन्हें दो तरह की सुविधाएँ थी | पहली मंदिर में आयी दान-दक्षिणा वे स्वयं ही लेते थे और दूसरी मंदिर उनका बैठकखाना भी था वहीं वे टयूशन भी पढ़ाते थे | मंदिर से उन्हें लाभ ही लाभ थे | यह उनका धार्मिक व्यवसाय था | जो बारह महिने फलता-फूलता था | सुनीत अभी तक मंदिर न गया था | पहला पीरियड़ आज खाली था | शिवानंद शर्मा आज आए नहीं थे | इस कारण वह मित्र हवीवुल्ला के साथ मंदिर देखने के लिए चला गया | तभी अचानक मंदिर में शिवानंद शर्मा आ गए | हवीवुल्ला नुल्ला और सुनीत को देखकर उनका पारा चढ़ गया था | वरवस ही उनके मुँह से निकल पड़ा था कि एक मांस काटनेवाला और दूसरा मांस खींचनेवाला | हे भगवान ! हे भगवान ! सत्यानाश हो तुम्हारा | हमारा तो मंदिर ही भ्रष्ट कर दिया |

सुनकर वे दोनों मंदिर से भागते हुए लौट आए थे | स्कूल में वहीं अध्यापक

'ईश्वर और बच्चे' यह पाठ पढ़ाते समय कहता है, "बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं |"[1] अध्यापक की बात सुनकर अजीब-सा लगा सुनीत को | उसके भीतर बार-बार सवाल आने लगे थे | उसका मन हुआ उठकर पूछें - "कौन से बच्चे भगवान का रूप होते हैं ?"[2] वह उस अध्यापक का नकली मुखौटा उतारकर फेंक देना चाहता है | फिर वह आगे का अंजाम सोचकर चुप रहता है | सुनीत के खिलाफ पाँच - छः अध्यापक मिलकर षड़यंत्र करने का प्रयास कर रहे थे | अगर ससुरे ढ़ेढ़ चमार के बच्चे ने हमारे स्कूल को टॉप किया तो नाक नहीं कट जायेगी हमारी | क्या ब्राह्मणों के बच्चे मारे गए अव्वल आने के लिए | ये ससूरे जूते गाँठनेवाले कैसे आगे ही आगे बढ़ते जा रहे हैं | सुनीत के मन के भीतर बार-बार सवाल-दर-सवाल उठ रहे थे | उसने कई बार किताबों में पढ़ा था | अध्यापक देश के निर्माता होते हैं | क्या ऐसे ही अध्यापक देश के निर्माता होते हैं ? कैसा निर्माण करते हैं वे देश का ?

अब सुनीत और सुमित्रा टीचर्स ट्रेनिंग में पढ़ रहे थे | सुमित्रा अब केवल सुमित्रा न रह गई थी | उम्र बढ़ने के साथ जवानी ने उसके शरीर पर जहाँ दस्तक दी थी वहीं मन के भीतर सवाल-दर-सवाल उपजने लगे थे | वे सवाल पहले बीज बने फिर पौधे के रूप में विकासित होने लगे | इस तरह ढ़ेर सारे सवाल नन्हे-नन्हे पौधों के रूप में उग आए थे | हर सवाल उससे जवाब चाहता, पर एक भी सवाल का जवाब वह न दे पाती | सुनीत के लिए उसके मन में तभी से अनुराग हो गया था, अब वह स्कर्ट पहनकर स्कूल आती थी | उनमें जातीय आधार पर विषमताओं के घने जंगल को काटने की इच्छा शक्ति भी आई थी | जिनके भीतर चंचलता नहीं थी, आक्रोश था | आक्रोश इसलिए था कि कड़वे अनुभवों से उनकी समझ ऐसी ही बनी थी | अतीत के टुकड़े अभी भी उसके भीतर आते, जो उसकी मन:स्थिति को बैचेन कर देते थे | पिछले दस वर्षों में उसने शहर के भीतर परिवर्तन की लहर को बखूबी महसूस किया था | जातियों की बनती-बिगड़ती संरचनाओं को करीब से देखा था |

आज का दिन सचमुच उनके लिए महत्वपूर्ण था, विशेष रूप में सुनीत के लिए |

---

1. मोहनदास नैमिशराय - मुक्तिपर्व, पृष्ठ क्र. 112
2. वही - पृष्ठ क्र.112

आज के दिन सुनीत को शिक्षक बनने का प्रमाणपत्र मिला था | कालीज के प्रांगण में अच्छी खासी भीड़ थी | आजादी के बाद की नयी पीढ़ी को शिक्षक बनाने का यह ऐतिहासीक दिन था | सुमित्रा ने उससे कहा था कि वे दिन बीत गए जब पढ़ना-पढ़ाना ब्राह्मणों का काम था | अब तुम भी पढ़ा सकते हो सुनीत | डॉ.बाबासाहेब अम्बेड़कर ने संविधान बनाकर सबको बराबर कर दिया था | सुनीत इतिहास भी बदलना चाहता था और वर्तमान भी | वह महसूस करता था कि बिना इतिहास की समझ के वर्तमान नहीं बदलेगा और जब तक वर्तमान नहीं बदलेगा तब तक भविष्य में परिवर्तन हो नहीं होगा | दलितों का जीवन वैसे ही निरस रहेगा, जिसमें उसे अनगिनत रंग भरने थे | वे रंग समता के थे तथा भाईचारे के थे | जीवन इन्हीं रंगों से तो खूबसूरत बनता है | उन रंगों का उसे एहसास भी हुआ था | वह जानता था कि बिना रंगों का जीवन कैसा होता है | समाज में समता और बराबरी नहीं तो आदमी अलग-अलग हो जाता है | शिक्षा विषयों के अलावा उसने इन दिनों दर्शन पर बहुत-सी किताबें पढ़ ली थीं | जिसमें डॉ.अम्बेड़कर जी की 'फिलासफी ऑफ हिंदुइज्म' से लेकर कार्ल मार्क्स की 'दास केपीटल' तक थी | गांधी को भी उसने पढ़ा था और नेहरू को भी |

पक्षी आकाश में उड़ते हैं, पर अपनी जगह को नहीं भूलते | उनके भीतर पहचान की समझ होती है, पर आदमी जब विकास के अनगिनत चरण से होकर गुजरता है तो वह अपनी जमीन को नहीं भूल पाया था | आज वह बस्ती के उसी स्कूल में लौटा था, विद्यार्थी के रूप में नहीं बल्कि अध्यापक के रूप में | सुनीत की लालसा थी कि बस्ती का हर-एक बच्चा पढ़ें-लिखें | वह बच्चा चाहे लड़का हो या लड़की | बस्ती के बच्चों को शिक्षित करना ही उसका मिशन था, कर्तव्य था और धर्म था | बस्ती के स्कूल में अध्यापक होने से स्वयं बस्ती के लोगों को भी बल मिला था | उनके भीतर चेतना के अंकुर और अधिक तेजो के साथ उभरे थे |

जिस दिन सुनीत ने स्कूल में अध्यापक के रूप में ज्वाइन किया था, बंसी की आँखों में रह-रह कर खुशी के आँसू आ जाते थे | बस्ती के प्रत्येक आदमी का मन पुलकित था | छमिया , सुंदरी, भूरी, उछाल और करतारा भी वहाँ पहले से ही मौजूद थे | उस दिन सुमित्रा भी आयी थी | केवल एक दिग्दर्शक के रूप में नहीं बल्कि अध्यापक के रूप में | सुमित्रा ने भी अपनी

नियुक्ति इसी स्कूल में करायी थी | उस दिन नुनीत ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा था कि सुमित्रा अभी हमें बहुत बड़ी जिम्मेदारी पूरी करनी है | क्या यह अच्छा होगा कि हम उसी जिम्मेदारी को मित्र बनकर निभाएँ |

❖ **निष्कर्ष :**

अत: कहना सही लगता हैं कि, नैमिशराय जी ने सवर्णों की अमानवीय मानसिकता पर कठोर प्रहार किया है | उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से दलितों की समस्याओं को स्पष्ट करते हुए चेतना जगाने का प्रयास किया है तथा उन्होंने दलितों को शिक्षा के माध्यम से समस्याओं का हल करने एवं आगे बढ़ने का संदेश दिया है |

वीरांगना झलकारी बाई

2.2. प्रास्ताविक :-

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में वीरांगना झलकारी बाई का महत्त्वपूर्ण प्रसंग हमें 1857 ई. के उन स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है, जो इतिहास में भूले-बिसरे हैं | बहुत कम तोग जानते हैं कि झलकारी बाई झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी और झलकारी बाई ने समर्पित रूप में न सिर्फ रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया बल्कि झाँसी की रक्षा में अंग्रेजों का सामना भी किया |

झलकारी बाई दलित-पिछड़े समाज से थी और निस्वार्थ भाव से देश की सेवा में रही | ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को याद करन हमें जरूरी है | इस नाते भी कि जो जातियाँ उस समय हाशिये पर थी, उन्होंने समय-समय पर देश पर आयी विपत्ति में अपनी जान की परवाह न कर बढ़-चढ़कर साथ दिया | वीरांगना झलकारी बाई स्वतंत्रता सेनानियों की उसी श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी रही है |

न धर्म रक्षा और न जाति रक्षा, झलकारी ने चूड़ियाँ पहनना छोड़ देश रक्षा के लिए बंदूक हाथ में ले ली थी | उसे न महल चाहिए था, न कीमती जेवर और न रेशमी कपड़े और

न दुशाले | वह न तो रानी थी और न ही पटरानी | वह किसी सामंत की वेटी भी नहीं थी तथा किसी जागीरदार की पत्नी भी नहीं थी | वह तो गाँव भोजला के एक साधारण कोरी परिवार में पैदा हुई थी और पूरन से व्याही गई थी | पिता भी आम परिवार से थे और पति भी, लेकिन देश और समाज के प्रति प्रेम और बलिदान ने उन्होंने इतिहास में खास जगह बनाई थी | दुख की बात यह कि जाति विशेष के चष्माधारी इतिहासकारों, साहित्यकारों और पत्रकारों में से किसी ने भी दलित समाज की उस वीरांगना झलकारी बाई की खबर नहीं ली थी |

2.2.1. वीरांगना झलकारी बाई : वस्तुपरक अध्ययन :-

विवेच्य उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार हैं - भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का 'बुलड़ोजर' एक-एक नगर नामशेष कर रहा था | झाँसी में भी उसकी दस्तक हो चुकी थी | झाँसी के बाहर और भीतर एक जैसी स्थिति थी | नदियों में पानी कम और खून अधिक बह रहा था | रियासतदारें और जागीरदारों की तलवारें अभी जंग नहीं खाई थी | खूब चमकती-दमकती पर आपस में ही टकराती थी |

बुंदेलखंड में झाँसी से चार कोस दूरी पर छोटा-सा भोजला गाँव | गाँव बड़ा न था, पर उसके भीतर एक बडा इतिहास पल रहा था | भोजला गाँव के भीतर भी बहुत कुछ रच-बस रहा था | गाँव में स्कूल नहीं था, मंदिर था | खेत थे, नाले थे, पथरीले रास्ते थे और उनके आसपास थी बुंदेलखंड़ी अस्मिता और पहचान | उनकी भाषा में मिठास और सहजता थी, पर मिजाज में गर्मी थी, आक्रोश था और जमीन आकाश को एक कर देने की बुलंदी थी |

भारत में राजनीतिक परिवर्तन हो रहा था | रियासतदार एक-दूसरे का खुन बहाते | उन्हें अपने ऊँचेपन पर अभिमान था, पर वे स्वाभिमान से परे थे | ब्रिटीश साम्राज्य से कुछ राजा तथा जागीरदार टक्कर ले रहे थे तथा कुछ ने अंग्रेजों के साथ समझौता कर लिया था | झाँसी पर भी अंग्रेजों की नजर थी | वे लष्कर झाँसी की तरफ ले जा रहे थे | भोजला गाँव में झलकारी यह लड़की सदोवा मूलचंद की थी | वह इन लष्कर को देखकर जिज्ञासावश लष्कर के दाढ़ीवाले बाबा से पूछ लिया कि यह घोड़े, हाथी कहाँ जा रहे हैं ? इस जिज्ञासावश सवाल और उसकी

ललाट को देखकर उस दाढ़ीवाले बाबा ने कहा था, "एक दिन तुम भी इतिहास बनाओगी बेटी |" दाढ़ीवाले बाबा ने झलकारी के माता-पिता को कहा था कि तुम्हारी बेटी बहुत बहादुर है | तुम्हारी बेटी का नाम एक दिन इतिहास में होगा | उसका आना-जाना झाँसी के दरबार में होगा |

झलकारी, चन्ना और रमची जलावन लेने भोजला जंगल आये थे | यह जंगल कुछ लोगों के लिए वरदान था तो कुछ के लिए अभिशाप | उस जंगल में खुँखार जानवर रहते थे जंगल में बाघ झलकारी पर हमला कर देता है, परंतु बहादुर झलकारी उसका सामना करती है | वह अपने हाथ में होनेवाली कुल्हाड़ी से उसके मुँह में वार करती है और बाद में उसके माथे पर वार करती है | कुल्हाड़ी माथे पर लगने से माथा फट जाता है और गिरकर जल्दी ही शांत हो जाता है | चन्ना और रमची यह देखकर तालियाँ बजाकर कहते हैं, "जीजी ने बाघ मार डालो · सबन से पहले हम खबर देंगे घर जाके |"[1]

झलकारी ने बाघ मारने की घटना गाँव के लिए गौरव की बात थी | इस बात से कुछ लोगों को खुशी थी तो कुछ को ईर्ष्या भी हुई थी | छोटी जात की लड़की किसी बाघ को मार दे | तत्कालीन समाज में वीरता और बहादुरी के सारे गुण सवर्ण समाज के क्षत्रियों के लिए सुरक्षित थे, और दलितों, पिछडी जाति के खाते में अवगुणों के साथ अयोग्यताओं की भरमार थी | फिर ऊँची जातियों के लोग आसानी से भला कैसे स्वीकार कर लेते कि कोरी जाति की एक लड़की ने बाघ को मार गिराया | कुछ लोग बाघ मारने की घटना को पूर्वजन्म से जोड़ने लगे थे | गाँव के पंड़ित ने स्वयं कहा था, "झलकारी पिछले जन्म में क्षत्रिय परिवार में पैदा हुई होगी | तभी का असर है उस पर | वह असर तो जन्म-जन्मांतर रहता है |"[1] इस बात पर भोजला गाँव के दलित और पिछड़ी जाति के लोग इस पर क्या विश्लेपण करते | विश्लेपण करने का सामर्थ्य तो सवर्णो के पास था | वे चाहें तो राई को पर्वत बना दें और पर्वत को राई |

तत्कालीन समाज में सवर्ण जातियों के लोगों के पास सुनाने के विशेषाधिकार थे | दलित समाज को सुनना पड़ता था | जब सवर्णों को दलितों, पिछड़ी जाति की जरूरत पड़ती, तुरन्त बुलाते | सवर्णों के रक्षा कवच पिछड़ी जाति थी | पिछड़ी जाति और दलित हिल-मिलकर

1 . मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र . 22

रहने से एतराज था | सवर्ण पिछड़ी जाति के लोगों को सछूत तो दलित को अछूत मानते थे | बीच में बस यही रेखा थी, जो दलित पिछडों को एक होने से रोकती थी | झलकारी के शौर्य की रोचक घटना चारों ओर फैल चुकी थी | पर कोई पूछ बैठता, "कौन की बिटिया आय ?"

जवाब मिलता, "कोरिन की |" यानी माता-पिता के नाम से पहले ही जाति का नाम आ जाता | लोगों की पहचान जाति, कुल, गोत्र से ही होतो थी | वे जातियाँ उन्हें विरासत में मिलती थी | ऐसी परंपरा थी हिंदू समाज में | पर झलकारी के द्वारा बाघ मारने की इस अभूतपूर्व घटना ने कोरी जाति का माथा गर्व से ऊँचा कर दिया था | यह खबर दूर-दूर तक पहुँच गई थी |

गाँव में हर बरस बाहरी लोग आते थे | ऐसे लोग जिनसे गाँव के धार्मिक और सामाजिक रिश्ते थे | पहले गुसाई लोग आए हाथियों पर चढकर | उन्होंने गाँव के बाहर डेरा लगा दिया था | गाँव में बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सब आर्शिवाद लेने भागते थे | इन दो दिनों में गुसाइयों की खूब आवभगत हुई थी | उनका काम था मुफ्त में खाना और अनपढ़ लोगों को झूटे सपनों में भ्रमित रखना | वे भाग्य-दुर्भाग्य, परियों, भूत-प्रेत तक के किस्से बताते थे | गुसाइयों को जनता से लेकर राज तक घबराते थे, क्योंकि घात-प्रतिघात की राजनीति में वे पारंगत थे | किसी भी आवभगत में कमी रह गई, वे तुरंत उबल पड़ते थे | तत्कालीन समाज पर उनका दबाव था | वे अपने आपको विराट संस्कृति के सूत्रधार मानते थे |

गुसाइयों के बाद पादरी पैदल चलकर गाँव के भीतर आ गए थे | लाल-लाल मुँह के आदमी | आते ही उन्होंने पूछा था - टुमारे गाँव में स्कूल हय |

फिर उन्होंने अगला सवाल किया था - टुमारे गाँव में अस्पताल हय |

सात समन्दर और तेरह नदी पार कर आए थे वे पादरी | पादरी के मन में विषमता नहीं थी | वे बिना किसी हिचकिचाहट के हर जाति के आदमी से हाथ मिलाते थे | उनकी निगाहों में मानवीयता का व्यवहार ही सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था | उन्होंने भारतीय समाज की जाति-प्रथा की विसंगतियाँ देखी थी | उन्होंने भारत में दलितों एवं पिछड़ी जाति की स्थिति को अधिक नजदीक से देखा था | वे उन्हीं परिस्थितियों में सुधार चाहते थे |

---

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.24

पादरी के बाद गाँव में बौद्ध भिक्खू आ गए | बौद्ध धर्म के अनुयायियों का उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाना था | वे सामाजिक न्याय के लिए गाँव-गाँव घूम रहे थे | एक बौद्ध भिक्खू ने गाँववालों से सवाल किया कि तुम्हारे गाँव में पाठशाला है ? उत्तर में गाँववालों ने इन्कार किया था | पर झलकारी ने अलग तरह से अपनी बात कही थी | उसने कहा था, पाठशाला तो है, परंतु बामन अपने घर पर पढ़ाते हैं भिक्खू उससे पूछते हैं कि तुम्हें नहीं पढ़ाते | वह कहती है कि वह हमें नहीं पढ़ाते | उनका कहना है कि पढ़ना तुम्हारा काम नहीं है | झलकारी की हिम्मत को बौद्ध भिक्खू ने सराहना की | बौद्ध भिक्खू ने जाते समय कहा था, अप्पदीप भव | जिसका अर्थ था अपना दीपक स्वयं बनो |

बौद्ध भिक्खू बिल्कूल सीधे-सादे थे | उनके भीतर कोई छुपाव-दुराव नहीं था | वे न सुविधाभोगी थे और न कुंठित | उनका हृदय विशाल था | वे मानवीय संस्कृति के उद्घोषक थे | जन-जन में मानवीयता की खुशबू फैलानेवाले बौद्ध के अनुयायी थे | वे किसी भी जाति के व्यक्ति को अपने सीने से लगानेवाले थे | उनके लिए राजा और रंक में कोई अंतर न था | औरत उनके लिए सम्मान का प्रतीक थी | वे रंगशालाओं के शौकीन नहीं थे | उन्हें कोई लगाव था तो मनुष्य और मनुष्यता से | वे सदैव विचार प्रवाह के हिमायती थे और रूढ़ियों, परंपराओं, जातियों के विरोधी थे | वे ठहरे हुए पानी की तरह सड़ांध नहीं थे |

तत्कालीन भारतीय समाज में विवाह बचपन में ही होते थे | कुछ विवाह तो जन्म से पहले ही हो जाते थे | झलकारी भी आठ-नौ साल की हो गई थी | झलकारी के परिवार में भी यही मान्यता थी कि उसका विवाह अब हो जाना चाहिए | भोजला गाँव में कोरी जाति से एक ही परिवार था | एक दिन बूढ़ा नाम गाँव से धन्ना नामक व्यक्ति आया था | उसमें और सदोवा में झलकारी के विवाह के बारे में बात छेड़ी | धन्ना ने झाँसी से पूरन नामक दस साल के लड़के का रिश्ता लाया था | वह घर पर बुनाई का काम करता था और कुश्ती और मलखम्ब का भी शौकीन था | अगले माह में रिश्ता पक्का हो गया | दोनों तरह की बात पूरी करने की जिम्मेदारी धन्ना ने ली थी | झलकारी के ब्याह की खुशखबरी सब तक पहुँच गयी थी | चन्ना-रमची ने एक दिन घर आकर कहा, झलकारी बहन, भोजला के जंगल में तो बाघ मार दयो, झाँसी मैं का मारोगी ? यह

सुनकर झलकारी ने तत्काल जवाब दिया था "देखत नई कैसे लसकरन सात चकत एकइ साथ सूधो हात आगे कत्त एकइ साथ ड़ेरो, पाँव आगे कत्त | सवके सव लाल लंगूरा |"[1]

झलकारी और पूरन का विवाह एक दूसरे का पूरक था | विवाह के पश्चात झलकारी ने ससुराल आते ही भीतर और बाहर का कार्य कुशलता से सँभाल लिया था | सुबह उठते ही वह हाथ-चक्की चलाती | कुएँ से तीन-चार मटकी पानी लाती | फिर राँटा कातती और पति के ताने-बाने के काम में सहयोग करती | घर में किसी तरह का भी काम हो, वह मेहनत से जी नहीं चुराती थी | घर-परिवार के साथ आस-पडोस की महिलाएँ भी उससे खुश थी | इसका सबसे बडा कारण यह था कि वह अभिमानी न थी, पर स्वाभिमानी जरूर थी | सदैव स्वयं खुश रहती थी और दूसरों को राजी-खुशी में देखना चाहती थी |

झाँसी उन दिनों उत्तरी भारत का समृद्धशाली शहर था | झाँसी भौगोलिक दृष्टि से संपन्न नगर था | झाँसी में कोरी जाति के घर अधिक न थे | नगर की प्रजा में आम और खास दोनों तबके के लोग थे | झाँसी का नगरीय समाज सभी तरह के रंगों से रचा-बसा था | गरीब अपनी गरीबी में संतुष्ट थे और अमीर अपनी अमीरी में फूले नहीं समाते थे | पर एक दूसरे के बिना किसी का काम नहीं चलता था | शहर को जितनी अमीर उमराव की जरूरत थी उतनी ही गरीब लोगों की भी | शहर में मंदिरों की भरमार थी | पर स्कूल यहाँ पर भी न था | धनाढ्य लोगों के बच्चों को पढ़ाने का प्रबंध स्वयं उनके घरों पर होता था या फिर मठों में | मठों पर ब्राह्मणों का प्रभूत्व थ |

राजा नाट्यशास्त्र का ज्ञाता नथा मंच विद्या का अनुभवी था | अंग्रेज प्रतिनिधियों के चरण पकड़कर महाराज गंगाधर राव को सिंहासन मिला था | उसे शान-शौकत से भोगना ही उसका उद्देश्य था | जनता जनार्दन की राजा से आशाएँ बहुत थीं | जबकि राजा केवल हुक्मरानों की भाषा जानता था | रंगीले राजा के ऐश्वर्य से उत्पन्न राज्य में महँगाई के दबाव और अतिरिक्त करों के वोझ से थकी-हारी जनता की पीठ पर फिरंगी के चाबुक की मार भी पड़ती थी | शहर के

---

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.31

चंद पढ़े-लिखों के समाज को लगता था कि झाँसी में कहीं कुछ ठहर-सा गया है | वही ठहरा हुआ एहसास एक-एक व्यक्ति के भीतर घर करने लगा था अब, सिवाय सात समंदर और तेरह नदियाँ पार कर आए हमलावारों के |

झाँसी के दक्षिण दिशा के परकोटे के बाहर अंग्रेजों का छोटा-सा पड़ाव था | नाम था स्टार फोर्ट | वहाँ अधिकांश रूप में गोला-बारूद, रसद और अस्त्र-शस्त्र आदि के रख-रखाव के लिए प्रयोग किया जाता था | शहर में अंग्रेज बहुत कम संख्या में थे, पर दबदबा था उनका | राजा तक उनकी अनदेखी नहीं कर सकता था | शहर में अधिकांश लोगों का स्वभाव भी राजा के अनुरूप ही था | मेजर एलिस तथा कैप्टन गार्डन यहाँ ईस्ट इंड़िया कंपनी के पालिटिकल एजेंट थे | उनका दरबार से लेकर रंगशाला तक में प्रवेश था | झाँसी के भूगोल से लेकर राजनीतिक मौसम पर उनकी कड़ी निगाह रहती थी | दरबार के कई भेड़िए उन्हें जानकारी देते रहते थे |

मछरिया जात से भंगी, पर भा गई थी नारायण शास्त्री को | हिंदू समाज की वर्ण व्यवस्था से उसका कद छोटा था, लेकिन रूप और लावण्य के आधार पर देखा जाए तो वह बमनियों, ठकुराइनों को भी मात देती थी | शास्त्री उसकी एक-एक अदा पर मरते थे | शास्त्री अधिक गहरे डूबते तो कविता लिख देते थे | मछरिया उनकी कविता की प्रेरणादायिनी थी | शास्त्री का नाम दूर-दूर तक लोग जानने लगे थे | उसके दो कारण थे - पहला कारण तो जगजाहिर था कि वे कवि थे, पर दूसरा कारण आग से भी तेज गति से लोगों तक पहुँचा था | उस खबर ने बहुतों को जलाया था | कुछ एक को उनका द्वेष होने लगा था तो कुछ को घृणा | कुछ को मछरिया और शास्त्री की प्रेम कथा की बात गुदगुदाती थी | मछरिया को उन्होंने अपने घर में रख लिया था | दासी या रखैल बनाकर नहीं पत्नी के रूप में | जो सीधे-सीधे ब्राह्मणी समाज को चुनौती थी

झाँसी में अन्तरर्जातीय विवाह की शायद पहली घटना थी | झाँसी के रूढ़िवादी लोग उस अन्तरर्जातीय दम्पत्ति से जले फूँके रहते थे | वे हर समय किसी न किसी अवसर की तलाश में रहते थे कि कैसे उन्हें नीचा दिखाया जाए | शास्त्री को कोई धर्मद्रोही कहता | कोई कहता कि मछरिया ने एक ब्राह्मण को पतीत कर दिया | उस पर जंगली कुत्ते छोड़ देने चाहिए |

उसके टुकड़े-टुकड़े कर चील-कौवों को खिला देने चाहिए | चांड़ाल की जनी और ब्राह्मण के घर घुस गयी | उसे जरा भी आचार-विचार का ध्यान न रहा | झाँसी हिंदू रियासत थी | राजा शास्त्री के हाव-भाव, उनके व्यवहार तथा प्रवृत्ति को अच्छी तरह से जानते-समझते थे | पर उनपर सीधे-सीधे हाथ डालते हुए घबराते थे | यहाँ तक कि उन्हें डाँट-डपट भी नहीं कर सकते थे | कोई छोटी जात से होता तो अब तक कई बार हड़का भी देते | उसे दंड़ भी दे देते | राजा के लिए दंड़ देने की कोई सीमा नहीं थी | पर वर्ण-व्यवस्था ने राजा को भी सीमा में बाँधा हुआ था | ब्राह्मण से कैसे निबटे | राजा अपनी मर्जी से ब्राह्मण के लिए दंड़ बना नहीं सकते थे |

उन्हीं दिनों झाँसी में जनेऊ प्रसंग खड़ा हो गया | जो नगर भर को उत्तेजित किए बिना नहीं रहा | जनेऊ पहनना कुछ के लिए हिंदू धर्म के मान-सम्मान का सवाल बन गया वहीं कुछ लोगों के लिए जातीय आधार पर समस्या | शूद्रों को इसलिए सताया जाने लगा कि उन्होंने भी जनेऊ पहनना शुरू कर दिया था | जबकि सवर्णों के लिए जनेऊ पहनना सामाजिक और श्रेष्ठता का प्रतीक था | वे ऊँचे थे तथा शेष नीचे | इसी बीच आंदोलन तेज हुआ तो दरबार की ओर से आदेश जारी हुआ | राजा रूढ़िवादियों के साथ हो गया था | स्वयं राजा का आदेश था | शूद्रों को जनेऊ मत पहनने दो | अगर पहने तो उनके जनेऊ तोड़कर फेंक दिए जाए | साथ ही दूसरा आदेश भी था | वह यह कि तांबे और लोहे के जनेऊ आग में लाल-लाल कर उन्हें पहनाएँ जाए | राजा के आदेश से जाँत-पाँत, छुआछूत माननेवालों को बल मिला |

झाँसी के राजा गंगाधर राव की रूचि थी तो रंगमहल में या रंगशाला में | स्वयं राजा पुरातन पंथी था | वह स्त्रियों की स्वाधीनता का समर्थक था और रूढ़िवादियों का भी | दिन ढले मछरिया जैसे ही शास्त्री के घर आई उसके भीतर का आक्रोश जैसे फूट पड़ा था, "राजा पराई लुगाईमनों को चूमत है, वाके पावन को हाथ लगात है, वामै कोनो धरम भरस्ट नई होत है |"[1] सुनकर शास्त्री ने शान्ति से बोले कि वे राजा है कुछ भी करें | उस पर मछरिया भड़क उठती है कि वे राजा है, कुछ भी करें और हम परजा | सब नियम प्रजा के लिए है | राजा अपने लिए कुछ सोचता ही नहीं | राजा बीस दासियों को हरम में रख कर उनके साथ रंगरलियाँ मना रहा है, फिर

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.39

भी उसकी आग नहीं बुझ रही है | मछरिया बाहर निकलती तो लोग उसे छेड़े बिना नहीं रह पाते | जनेऊधारियों से लेकर तिलकधारियों तक की उसे देखकर लार टपकती है | मछरिया पूछ बैठती कि मुझे रखोगे तो यह जनेऊ आड़े नहीं आएगा | जवाब में वे कहते हैं कि हम इसे निकाल कर फेकेंगे | एक औरत के लिए जनेऊ का महत्व खत्म हो जाता और धधकते मांस पिंड़ के आगे वह धागे का मात्र टुकड़ा बनकर रह जाता | ब्राह्मणत्व समाप्त हो जाता, उस पर लम्पटता हावी हो जाती है |

झाँसी में रानियों, पटरानियों, जागीरदारनियों, रखैलें तथा दासियों के बीच शास्त्री और मछरिया के प्रेम प्रसंग पर चर्चा थी | वेश्याओं के बीच भी वही चर्चा थी | थमने का नाम ही नहीं ले रही थी | जैसे झाँसी में उससे बढ़कर प्रसंग हो ही नहीं | राजपाट, सत्ता, महल, दरबार, सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात के साथ अरबी घोडे की खरीद-फरोक्त सभी सवाल फीके पड़ गए थे | नवाब साहब और मोतीबाई के बीच मछरिया की बात चलती है | मोतीबाई को भी ईर्ष्या होती है | वह कहती है, वह कैसे रंग दिखाने लगी निगोड़ी ? तभी गंभीर स्वर उभरा था दूसरी ओर से | मोतीबाई रंग कौन नहीं दिखा रहा है अब | वे फिर बोले थे कि अब राजा साहब क्या कम हैं | उनका बस चले तो नंगे होकर नाचने लगेंगे | मोतीबाई कहती है कि मछरिया को तो अपनी औकात में ही रहना चाहिए |

मछरिया के घर में अलग कोहराम मचा था | गुंड़ई पर उतर आए थे कुछ लोग | ईंट पत्थर भी फिंकवा दिए थे उसके घर में | ईंट-पत्थर फेंकनेवालों का कुछ अता-पता नहीं चला था | जाते हुए वे आग लगाने की धमकी दे गए थे | उनकी धमकी का जवाब देता भी कौन ? घर में उम्र के अंतिम पड़ाव पर मौत की प्रतीक्षा करता हुआ मछरिया का बूढ़ा बाप | मछरिया हर रोज आती थी अपने बूढ़े बाप को देखने के लिए | बस्ती के लोग वैसे ही खार खाए बैठे थे | मछरिया पर दोहरी मार पड़ रही थी | बस्ती में आती तो उसकी जात के लोग लुगाई उसे खाने को दौडते | बस्ती से बाहर जाती तो गैरों के घृणास्पद रवैये को झेलना पडता | पर झेल तो बचपन से ही रही थी वह यह सब | सात-आठ बरस की थी | तभी से ये लोग उसे औरत बनाने पर तुल गए थे |

कोरियों की पंचायत में भी जनेऊ प्रसंग के लिए सुगबुगाहट हुई थी | उनके आखाड़े भी थे, जहाँ नौजवान ड़ंड़ पेलते तथा मुगदर घुमाते थे | वे कसरती जवान थे | कोरी समाज के कुछ युवकों ने भी जनेऊ धारण करने की हिम्मत जुटाई थी | पूरन उनके साथ था | हालाँकि बड़े-बूढ़ों ने इन सबका समर्थन नहीं किया था | गलती उनकी नहीं थी | जैसे उन्हें पढ़ाया गया, उन्होंने वैसा ही सीखा, पर नौजवान वह सब सीखने को तैयार न थे | उनका आत्म-स्वाभिमान जाग रहा था | वे चेतन हो रहे थे | जिस दिन नए जनेऊ धारियों की दरबार में पेशी थी उसी दिन शास्त्री और मछरिया को भो बुलवाया गया था | सभी के ओठों पर यही सवाल था कि शास्त्री और मछरिया को राजा आखिर क्या फैसला सुनाता है | पहले राजा के सामने जनेऊधारियों को पेश किया गया | राजा ने कहा था कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के अलावा अन्य किसी को जनेऊ पहनने का अधिकार नहीं है | भरे दरबार में नए जनेऊधारियों को क्रूरतम और अमानवीय दंड दिए गए | किसी की गर्दन जली तो किसी का कन्धा, किसी की छाती | तन के साथ उनके मन भी जले | उनकी भावनाएँ धुआँ हुई और मानसम्मान भी |

बाद में हुई पेशी नारायण शास्त्री और मछरिया की | दरबारियों द्वारा मछरिया को लालच दिया गया | शायद मन बदल जाए | धमकाया भी गया | शास्त्री को शास्त्रों की दुहाई दी गई | लोकलज्जा और लोकमर्यादा का वास्ता दिया गया | पर मछरिया और शास्त्री में टूटन क्या दरार तक नहीं मिली | न शास्त्री मछरिया को छोडने के लिए तैयार थे और न मछरिया शास्त्री को | उनकी देह दो थी, पर सांस जैसे एक | वे एक-दूसरे के लिए मरने मिटने को तैयार थे | मछरिया और शास्त्री का प्रेम न राजा को रास था और न दरबारियों को | अंतत: राजा को फैसला देना पडा | फैसला था उन्हें देश से निकाला जाए | मछरिया और शास्त्री तो चले गए | लेकिन उनके जाने के बाद तक झाँसी का परिवेश उनके किस्से-कहानियों से गूँजता रहा | हवा में भी गर्माहट रही | कुछ भी न बदलकर भी जैसे सब कुछ बदल गया था | परिवर्तन की आँधी ने जड़ हुए समाज के बीच एक तरह का कंपन तो पैदा कर ही दिया था | आम आदमी के भीतर उसी दिन से बार-बार अनगिनत सवाल उभरते थे | सबसे बडा सवाल था - क्या राजा ने न्याय किया ? फिर भी वे दोनों हारकर भी जीत गए थे और राजा जीतकर भी हार गया था | दरबार में कही गयी

मछरिया की दो टूक बेबाक बात स्वयं राजा के भीतर तक फाँस की तरह चुभ गई थी | मल-मूत्र उठानेवाली किसी औरत ने पहली बार राजा की आँखों में आँखें डालकर बात की थी | दरबार और सिंहासन जैसे हिल गए हों | सभी के अस्तित्व को एक बार झटका दे दिया था मछरिया ने | राजा उस झटके से अभी तक उभर नहीं पाया था | दरबारी अभी भी किसी स्वप्न की गिरफ्त में थे |

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की दृष्टि आरंभ से उदार और स्पष्ट थी | उसका बचपन रूढियों और परंपराओं के बीच अवश्य ही बीता था, लेकिन समय को देखकर चलना सीख लिया था लक्ष्मीबाई ने | महल की ऊँची-ऊँची दीवारों के उस पार बहुत रानियाँ छटपटाई होंगी, पर रानी लक्ष्मीबाई ने जैसे छटपटाना सीखा ही नहीं था | मुक्त विचरण किया था उसने | वह पहली रानी थी, जिसने महल के बाहर की भी खोज-खबर लेने की कोशिश की थी | राजाओं के राह और माह का खेल उसे रास नहीं आता था | उन सबसे अलग वह कुछ करना चाहती थी | वह रूप और लावण्य में जहाँ भरपूर थी वहीं अच्छे स्वभाव के कारण उसकी छवी दूर-दूर तक फैल चुकी थी | घोड़े की सवारी करना, हथियार चलाना, तेज दौडकर पहाड चढ़ना, भाला फेंकना, दीवार लाँघना आदि उनकी आदतें थी | झाँसी की कौन-सी ऐसी बस्ती थी, जिसकी खबर रानी को नहीं थी | खास सहेलियाँ और आम औरतों की भी खबर रखती थी वें | यूँ झलकारी आम होते हुए भी खास ही थी | तभी तो स्वयं रानी को उसकी टोह लेने की जरूरत आ पडी थी | जिस इतिहास ने 1857 की स्वतंत्रता संग्राम की परिस्थितियों का निर्माण किया था | उसकी निर्माती अकेली रानी लक्ष्मीबाई ही नहीं थी तो झलकारी भी थी | सूत कातते हुए उसने क्रांति की लड़ियों की बुनावट कर डाली थी | ऐसी बुनावट, जिसमें अंग्रेज भी उलझ कर रह गए थे | तभी तो क्रांतिकारियों को पूरी तरह से वे बेदखल नहीं कर पाए थे | झलकारी रानी तो न थी, पर आस-पडोस में तेजी के साथ उसे लोग जानने-पहचानने लगे थे | एक विशेष कारण यह था कि उसकी शक्ल-सूरत रानी से मिलती-जुलती थी | उसकी सीधी सपाट भाषा तथा तीखे स्वभाव से भी बस्ती में वह और भी चर्चा का विषय बनने लगी थी |

15509

किले के महल में रानी ने चैत की नवरात्रि में गौरी की प्रतिमा की स्थापना की | पूरन आरम्भ हुआ | गौरी की प्रतिमा आभूषणों से लद गई | उत्सव में सारे नगर की महिलाएँ व्यस्त थी | वे सज-सँवर रही थी | शहर में चहल-पहल थी | उस विशेष अवसर पर किले में जाने की सब जातियों को आजादी थी, पर जहाँ अपने कक्ष में रानी ने गौरी को स्थापित किया था, वहाँ दलित जातियों की स्त्रियाँ नहीं जा सकती थी | उनके लिए वहाँ जाना मना था | गौरी की प्रतिमा कहीं वे छू न लें, और वहीं प्रतिमा भ्रष्ट हो जाए इस बात का उन्हें डर था | गौरी पूजन देखना भी उनके लिए अशुभ था | हिंदू धर्म में अपनी परिपाटियों के कारण विरोधाभास था | कुछ के लिए पूजा-पाठ धर्म तो कुछ के लिए अधर्म | स्वयं रानी का व्यक्तित्व भी विरोधाभास का परिचायक था | यह विरोधाभास से युक्त जिंदगी उसे विरासत में मिली थी | ससुराल में आने पर और भी अधिक प्रभाव पडा था | राजा सब कुछ सहन कर सकते थे, लेकिन रानी महल के पूजा-गृह में सभी जाति के स्त्रियों को बुलाए यह उन्हें बर्दाश्त न था | पूर्वजों की सीख यही थी | पुरोहित और पुजारियों से उन्होंने प्रशिक्षण जो पाया था | रानी को भी इन्हीं परिपाटियों के अनुरूप चलना था | उसकी यह मजबूरी थी या फिर वर्ण-व्यवस्था की जकड़न थी |

आभूषण से सजी सुंदर ललनाएँ उनका छलकता रूप और यौवन, सभी महिलाएँ सज-धज कर आयी थीं | वे सभी रानी को बारी-बारी से माला पहना रही थीं | उन्हीं में से एक नववधू माला लिए आगे बढ़ी शरीर पर रंग-विरंगे कपड़े, चाँदी के जेवर, जो सोलह आना बंदेलखंडी थे, रंग थोडा-सा साँवला, रानी से मिलती-जुलती आकृति | स्वयं रानी को आश्चर्य हुआ उसे देखकर | रानी ने मुस्कुराते हुए पूछा, "कौन हो ?"

उत्तर मिला, "सरकार हौ तो कोरिन |"

"पर नाम क्या है तुम्हारा ?"

"झलकारी दुलैया |"

यह रानी से पहली मुलाकात थी झलकारी की | इसी मुलाकात से इतिहास के पन्ने खुलने लगे थे | जिस इतिहास में दलितों का वजूद और संघर्ष बढ़ने लगा था | रानी ने मुस्कुराते हुए पूछा था कि तुम्हारे पति क्या करते हैं ? झलकारी जवाब में बोली थी कि महाराज, मेरे घर में

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

कपड़ा बुनने का काम होता हैं | पर अब पति काम पर ज्यादा ध्यान नहीं देते | वे मलखम्ब, कुश्ती की ओर ज्यादा ध्यान देते हैं | अब सरकार घर कैसे चले ? रानी ने फिर धैर्य से कहा था, "यह तो तुम्हारे पति बहुत अच्छा काम करते हैं | तुम भी मलखम्ब और कुश्ती सीखो | घोड़े की सवारी भी सीखो |"

छान्ना-रमची की जोड़ी के बारे में भोजला गाँव में सभी जानते थे | एक जात से जाटव और दूसरा वाल्मीकि | चन्ना का पूरा नाम था चम्पालाल और रमची का रामचरण था | लोग उन्हें पूरे नाम से नहीं पुकारते थे | कभी-कभी तो अधूरा नाम भी उनके हिस्से में नहीं आता था हिस्से में आती थी जात के नाम पर दी गई जलालत | सवर्ण जाति के अधिकांश लोग उन्हें गलत संबोधनों से पुकारते थे | सवर्णों का उद्देश्य था दलितों की जातीय अस्मिता और पहचान पर चोट करना, उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाना | चन्ना और रमची एक दिन झाँसी नगरी देखने चले | दोनों के मन में भय भी था | शक्ल-सूरत तो अच्छी थी, पर कपड़े मोटे सूत के थे | पाँव में चप्पल भी नहीं थी | कपड़े भी साबुत कहाँ थे शरीर पर | थिगलियाँ लगी थी जगह-जगह | दोनों का एक जैसा ही हाल था | जेब में दो-चार पैसे ही थे | सूखी रोटियाँ लेकर चले थे गाँव से | मुख्य मार्ग पर चलना उन्हें मना था | तथाकथित श्रेष्ठ जाति के लोग उनकी परछाई से भी दूर रहते थे | उन्हें देखना वे अपशकुन मानते थे | जानवरों को चाहे जैसे हकाल दिया, वैसी स्थिति उनकी भी थी | दलित समाज के लोग मजबूर थे | बोलने पर उन्हें दंड सहना पड़ता था | उन्हें सुनना पड़ता था | प्रतिक्रिया व्यक्त करने पर उनकी जीभ काट ली जाती थी | दुनिया के विधानों से अलग विधान थे इस देश की धरती पर | सभी रियासतों और रजवाडों में छुआछूत थी | हर जगह आदमी की पहचान उसकी जात से होती थी | उसी के आधार पर उनका मान-सम्मान होता था | दलित जातियों के लोग परकोटे के बाहर रहते थे नगर में जातियों के आधार पर ही बस्तियाँ और पड़ाव थे | जात को अप्रासंगिक बताते हुए रंगकर्मी ओमप्रकाश नदीम कहते हैं,

"आदमी के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जिस चीज ने
लोग उसको धर्म कहते हैं अज़ब दस्तूर है |"[१]

---

1. संपादक - मोहनदास नैमिशराय - बयान, अंक - 11, जून 2007, पृष्ठ क्र. 13

भोजला गाँव का मिजाज बदल रहा था | गाँव के ही दलितों के दो लड़के सेना में भर्ती हो गए थे | पिछले माह लौटकर आए तो गाँव के सरपंच की आँखों में आँखें डालकर उन्होंने बात की | गाँव के इतिहास में यह पहली बार हुआ | वरना वहीं दलित ठाकुर की मार सहते-सहते बिलबिलाते थे | सरपंच की भैंस मर गई | कोई चमार उसे उठाने नहीं आया | दो दिन आसपास सडाँध रही और तनाव भी रहा | चमार जाति के लोग टस से मस नहीं हुए | मजबूर होकर रात में चोरी-छुपे दूसरे गाँव से तीन-चार लोगों को सरपंच ने बुलवाया | तब जाकर सड़ाँध दूर हुई | उस घटना से दलितों को अपनी ताकत का एहसास हुआ था | साथ ही उस गुलामी का भी, जिसे सदियों से वे सहते आए थे |

उन्नीसवीं शताब्दी के भारतवर्ष में हिंदू धर्म की संकीर्णता जग जाहिर थी | उन दिनों दो तरफ की क्रांतियाँ साथ-साथ चल रही थीं | पहली क्रांति सामाजिक अन्याय के खिलाफ और दूसरी लड़ाई अंग्रेजी साम्राज्य के विरोध में | लेकिन तत्कालीन जमींदार और पुरोहित वर्ग का किसी भी तरह की क्रांति से लेना-देना नहीं था | अशिक्षा, गरीबी, कुसंस्कारों, धर्म और जातियों से लाभ उठाकर जन साधारण का शोषण करते थे, उन्हें गुमराह करते थे | शिक्षा बहुत खास परिवारों के लिए सुरक्षित थी | आम आदमी का शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं था | मजदूर को पसीना सूखने के बाद भी मजदूरी नहीं मिल पाती थी | न्याय सुलभ न था | सुलभ थी तो केवल मौत | जिस पर कोई रोकटोक न थी | समाज में जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ थी |

झाँसी में भी राजनीतिक तथा सामाजिक स्थितियों में तेजी के साथ बदलाव आ गए थे | झाँसी में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों तथा सैनिकों का दवाव बढ़ता ही जा रहा था | स्वयं राजा असहाय था | अंतत: 21 न्वम्वर, 1853 को राजा गंगाधर राव का देहान्त हो गया | झाँसी में यह विपदा की शुरूआत थी, पर पराधीनता से स्वाधीनता के विचार का उभरना भी यहीं से आरंभ हुआ था | जिस दिन राजा की मृत्यु हुई, रानी की उम्र 18 वर्ष की थी | इस आघात को झेलने के लिए यह कोई बड़ी उम्र नहीं थी, पर अनुभवों ने उन्हें सब कुछ सिखा दिया था |

राजा गंगाधर की मृत्यु पर ड़लहौसी ने झाँसी की मिसिल पर 27 फरवरी, 1854 को हुकुम चढ़ाया माकलस के पास ड़लहौसी की आज्ञा आ गई और उसने विना विलंव नीचे लिखा

हुआ इश्तिहार एलिस के नाम भेज दिया - "दत्तक को गवर्नर जनरल ने नामंजूर किया है | इसलिए भारत सरकार की 7 मार्च, 1854 की आज्ञा के अनुसार झाँसी का राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया जाता हैं | इश्तिहार के जरिए सब लोगों को सूचना दी जाती है कि झाँसी प्रदेश का शासन मेजर एलिस के अधीन किया जाता है | इस प्रदेश की सब प्रजा को अपने ब्रिटिश सरकार के अधीन समझे और मेजर एलिस को कर दिया करें और सुख संतोष के साथ जीवन-निर्वाह करें | 13-03-1854 ह. मालकम |"[१]

झाँसी के इतिहास की इसी दुखद घड़ी से रानी ने युद्व की तैयारी करनी आरंभ कर दी थी और एलिस ने झाँसी का साम्राज्य का 'अंग्रेजी बंदोबस्त' शुरू किया | दीवान से दफ्तर की चाभियँ ले ली गई | थाने पर अधिकार कर लिया गया | शहर में अंग्रेजी राज्य और अपने अधिकार की डोंड़ी पिटवा दी गई | तहसिलों में कड़े प्रबंध के समाचार भेजे गए और रानी से किला भी खाली करा लिया गया | जिस झाँसी के लिए रानी लक्ष्मीबाई ने संघर्ष का रास्ता अपनाया उसी झाँसी का राजसिंहासन पाने के लिए उनके पूर्व राजाओं, रानियों, जागीरदारों ने एक दूसरे के लिए छल और बल से कितने षड्यंत्र नहीं रचे थे | कितने लोगों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के दरवाजे पर जाकर दस्तक नहीं दी होगी | धर्म, आस्था, संस्कार और परंपराओं की विरासत का अपमान हिंदू जनता खुली आँखों से सहन करते हुए नपुंसक बन अंग्रेजों की अंग्रेजियत तथा आधुनिकता को खूब कोसते थे | जैसे उनके वश में अब यहीं था | अंग्रेजों को कोसना और मंदिरों में घंटे बजाना |

झाँसी साम्राज्य की बदली हुई व्यवस्था से सभी खिन्न थे | पर वे कर भी क्या सकते थे | पुराने दरबारी चुप होकर बैठ गए थे | सबको अपनी जान की फिक्र थी | भला कोई क्यों जान जोखिम में डालता | झलकारी बदलती हुई परिस्थितियों को पढ़ने की जुगत में थी | झाँसी की प्रजा के बीच वह साधारण जन थी, लेकिन सोच उसकी असाधारण थी | जिस दिन एलिस ने घोषणा पढ़कर सुनाई थी | उसे भी सुनकर सदमा पहुँचा था | वह रानी नहीं थी, न ही किसी नवाब की बेगम, पर उसे अपनी झाँसी के छिन जाने का दुख था | झाँसी पर विपत्ति के

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.56

बादल मँड़राने लगे थे | राजप्रसाद से लेकर जन सामान्य तक को यह अहसास होने लगा था | सभी के भीतर एक भय भी था | रानी को गद्दी छिनने का डर था तो जागीरदारों को उनकी जागीरें और दस्तकारों से उनकी दस्तकारी | गरीब के पास हालाँकि खोने के लिए धन दौलत और संपत्ति न थी | पर उसे उसकी अस्मिता और पहचान के छिनने का डर था |

रानी ने बुंदेला, ठाकुर, क्षत्रिय आदि के साथ काछी, कोरी, तेली, कसाई, पासी सभी वर्गों के लोग भी अधिक संख्या में सेना में शामिल हो ऐसी योजना बनाई थी | रानी ने अफगाण, पठाणों और मकरानी मुसलमानों को भी विश्वास में लेना चाहा था | झाँसी की रक्षा जो करनी थी, पर एक सवाल उन्हें बार-बार परेशान कर रहा था | वह था दलित जाति के लोगों को सैनिक बनाने का | कहीं अग्रिम पंक्ति के उच्च हिंदू इससे बुरा न मान बैठें | उन्हें यह प्रस्ताव अच्छा भी लगेगा या नहीं ? कुछ लोगों ने यह प्रश्न उठाया | मगा गन्धी ने कहा था कि रानी साहिबा, हिंदू धर्म की भी कुछ परंपराएँ हैं | जिन्हें लोग हजारों सालों से मानते चले आए हैं | सुना है आपने छोटी जातियों के लोगों को भी सेना में भर्ती होने का आदेश दिया है | बीच में श्याम चौधरी ने कहा था कि आपने महिलाओं को भी भर्ती होने का आदेश दिया है | रानी को जैसे बोलना पड़ा, अंग्रेजी सेना में कितने ऐंग्लो इंडियन, ईसाई, मुसलमान, अफगाण, पठाण, मुगल, तुर्क, मंगोल, हिंदू, सिख, शूद्र होते हैं | वहाँ तो कोई छुआछूत नहीं होती | तभी मगा गन्धी के भीतर से आक्रोश से भरा स्वर उभरा था कि ये ससुर अंग्रेजों ने ही तो हमारे देश में आकर सारी गड़बड़ पैदा की है | रानी को जैसे सूत्र मिला था, तो मगा गन्धी जी अंग्रेजों को कैसे सबक सिखाओगे ? एक दूसरे को छोटा मानकर | समाज में विषमता के बीज तो तुम सब पहले से ही बिखेर चुके हो | रानी गंभीर स्वर में फिर बोली थी, "जब झाँसी ही नहीं रहेगी तो झाँसी में तुम सब कहाँ रहोगे | फिर आएँगे तो वे जाति पूछकर तुम्हें ठोकर नहीं मारेंगे | उनका आघात सभी को सहना होगा | यहाँ खून बहेगा |"[1]

तत्कालीन समाज में महिलाओं को हथियार चलाने की कहाँ परंपरा थी | परंपरा थी तो केवल जौहर की | वे केवल भोग की वस्तु थीं और पत्नी होने के बावजूद किसी दासी या

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.62

रखैल से कम न थी | क्षत्रियों के अलावा किसी के सैनिक बनने पर या तो वे विरोध करते या फिर उपहास | महिलाओं का युद्व क्षेत्र में जाकर तड़ना तो उन्हें बिल्कुल भी बर्दाश्त न था | झाँसी के रानी ने इसका दर्शन ही उलट दिया था | समाज में खलबली मचनी लाजमी थी | खलबली होने का एक खास कारण और था, वह था दलित समाज की एक महिला को महिला सेना का कमांड़र बना देना | रूढ़ियों और परंपराओं में लिपटी झाँसी की स्थिति शुतुरभुर्ग जैसी हो गई थी | पर संतोष की बात यह थी कि कुछ सिरफिरे रूढ़िवादियों के छोड़कर हिंदू-मुसलमान सभी ने बिना किसी भेदभाव के रानी की पताका के नीचे मर मिटने की कसम खाई थी |

दलित समाज के लोग साहसी थे और बहादुर भी, लेकिन उनकी अपनी पहचान बने, ऐसा सवर्ण समाज नहीं चाहता था | इसी बीच दलित पिछड़े समाज के लोगों में जैसे उत्साह का नवीन संचार हुआ था | विशेष रूप में महिलाओं की सेना बनाने का रानी के प्रस्ताव का तो स्वयं उन वर्गो की महिलाओं ने स्वागत किया था | घर गृहस्थी के काम धन्धों के अलावा तलवार चलाना, भाला फेंकना, बंदूक चलाना आदि सीखने को तो मिलेगा | झलकारी बचपन से ही वीर और साहसी थी | वह ईमानदार और मेहनती थी | उसके मन में आरंभ से ही सैनिक बनने की लगन थी | सैनिकों को वर्दी में देख तथा युद्व में डंका बजते हुए सुनकर उसकी भुजाएँ भी रणक्षेत्र में जाने के लिए फड़कने लगती थी | उसके मन में देश प्रेम की ज्वाला धधकने लगती | जब कभी उसके आसपास तलवारें चलने तथा गोला फूटने की गूँज होती, जैसे उसके कानों में कोई कहता कि झलकारी तुझे भी सैनिक बनना है | तुझे देश सेवा करनी है | तुझे अंग्रेजों को अपनी धरती से भगाना है |

उन्नाव द्वार के उत्तर में एक बड़ा टीला था और उसके उपर अंजनी देवी का मंदिर | उसी के नाम से यह टीला अंजनी की टोरिया कहलाता था | इन्हीं पर झलकारी निशानेबाजी करने के लिए आती थी | रानी ने उसे सेना का कमांड़र जो बनाया था | वह पहले स्वयं मेहनत करती और लगन से सीखती फिर दूसरों को सिखाती | उस अंजली की टोरिया के पास बीहड़ जंगल था | यहाँ बरेदी ढ़ोर चराने आया करते थे | झलकारी ने कई लोगों के मुँह से सुना कि इसी जंगल से कोई भेड़िया आकर नाले के भस्के में छुपा है | जो बछड़े, बछिया के साथ भेड़ तथा

बकरी मारकर खा जाता है | उसका मन कहता था कि वह उस भेड़िए को वहाँ जाकर खुद मारे | एक दिन झलकारी मुँह अँधेरे उठी | अपनी बंदूक उठाकर कंधे पर रख ली | कारतूस की पेटी कंधे पर लटकाकर अंजनी टोरिया की ओर चल दी | वह बंदूक कंधे के सहारे रख पेड़ की आड़ में बैठ गई | अभी थोड़ी देर भी नहीं हुई कि उसने देखा भस्के से भेड़िया निकलकर आगे बढ़ा | उसने बंदूक सँभाली | तभी बंदूक से गोली चली | झलकारी की बंदूक से गोली तो छूट चुकी थी | पर गोली कहाँ लगी, किसे लगी उसके मन में संदेह था | बंदूक कंधे से हटाकर उसने देखा | सामने कोई न था | उसके भीतर घबराहट भी हुई, यह सोचकर कि कहीं गोली भेड़िए को न लगकर किसी और को लग गई तो | वह तेज कदमों से घर लौट आयी |

असल में झलकारी की गोलो एक बछिया के पैर में लगी थी | जो कुछ खास घायल नहीं हुई थी | बछिया एक ब्राह्मण की थी | वहाँ से हटाकर चुपके से दतिया रवाना कर दी थी | ब्राह्मण को पढ़ा दिया कि कह दे कि बछिया उसके सामने झलकारी ने मार ड़ाली | क्योंकि सभी जानते थे कि झलकारी प्रतिदिन वहाँ अभ्यास करने आती है | सबको उससे ड़ाह थी | एक दलित महिला से बैर चुकाने का अच्छा तरिका ढूँढ़ा था उन्होंने | संध्या को चारों तरफ उसी के बारे में चर्चा हो रही थी | यहाँ तक कि जाति-बिरादरीवाले भी पीछे न थे | नगर-भर में शोर हो गया था कि पूरन की घरवाली ने गऊ हत्या कर दी | बस्ती में बढ़-चढ़कर उनके खिलाफ जहर उगल जा रहा था |

लोगों ने जाति बहिष्कार का दंड़ देने के लिए पंचायत बुलाने का निर्णय लिया | पूरन को पंचायत बैठने की खबर दे दी गई थी | पंचायत में महंत, मुखिया, छड़ी बरदार, चौधरी छोटे-छोटे सभी लोग सम्मिलित थे | कोई कहता था, मर्द अब चूड़ियाँ पहनेंगे, औरतें मलखम्ब करेंगी | सब अपनी अपनी भड़ास निकाल रहे थे | किसी को औरतों से कुंठा थी तो कोई कोरी जाति के लोगों की थोड़ी-बहुत उन्नति देख जल-भुनते थे | पूरन को पंचों के बीच खड़ा कर दिया गया था | पूरन ने सिर थोड़ा उठाते हुए जवाब दिया था, पंचों गलती माफ हो | वह एक दिन गौर पूजने महल गई थी | वहाँ रानी ने देश की खातिर बंदूक और तलवार चलाने की बात की थी | पंचों इसी अभ्यास के कारण वह टोरियों पर गई थी | इससे चौधरी ने कहा था कि गऊ हत्या बड़ा

पाप है | इसे जाति से निकाल दो | अंत में पंचों ने झलकारी का काला मुँह करके गधे पर चढ़ाकर बाजार में जुलूस निकालने की बात तय की गई | इस हिंदू समाज ने उन्हें झूटे ही गऊ हत्या के अपराध में फँसाया गया था | वह किसके पास जाकर अपना दुखड़ा रोए | इसी चिंता में डूबा हुआ वह घर तक पहुँचा | जातिवादी और सामाजिक परंपराओं के नियमों के अनुसार जाति बहिष्कार की सजा सुन पूरन का मन व्यथित था | झलकारी की सलाह से पूरन ने रानी लक्ष्मीबाई को व्यथा बतला दी |

तत्काल रानी ने ब्राह्मण को बुलवाया | ब्राह्मण ने झूठ भरी बातें कह दी | झूठ आखिर कब तक छुपा रहता | वह झूठ जो सामाजिक अन्याय का प्रतीक था | वह भी एक नारी के खिलाफ | ऐसी नारी जो दलित समाज में जन्म लेकर कुछ करना चाहती थी | एक ब्राह्मण झूठ बोले | यह बुरी बात थी | वैसे भी ब्राह्मण को झाँसी जैसे हिंदू राज्य में दंड़ मिले यह और भी बुरी बात थी | वैसे भी ब्राह्मण को दंड़ देना सामाजिक रूप से अपराध था | अत: रानी ने ब्राह्मण को छोड़ दिया जो एक ऐतिहासिक भूल थी | दोषी ब्राह्मण साफ-साफ बरी हो गया था | हाँ, पूरन की फरियाद क इतना फायदा जरूर हुआ कि सच क्या था, इसका पता चल गया था | रानी समझती थी कि गाय को मारना समाज में अपराध है भले ही वह घायल हुई हो | शेष ब्राह्मणों ने रानी लक्ष्मीबाई के कान भरे | इससे दो फायदे होंगे, सजातीय ब्राह्मण की खोई हुई प्रतिष्ठा भी वापस लौट आएगी और पूरन के परिवार को सजा भी मिल जाएगी | बछिया के घायल होने का दंड़ उन्हें भोगना ही था | शास्त्र यही कहता था | नियम कानून उसी ड़ोर से बन्धे थे | जो शास्त्रों में निश्चित था, वही होना था | पूरन के परिवार को पहले गंगा स्नान करना पड़ा | जहाँ घाट पर बैठे पंड़ों ने उन्हें मूंड़ा | वापस लौटकर भोज देना पड़ा |

हल्दी-कुमकुम का उत्सव आ गया था | रानी ने राजकुमारी से झलकारी को संदेश भेजा था | झाँसी में राजनीति का मौसम भले ही कैसा भी हो, पर कोई भी त्यौहार आने पर नगरवासियों पर उसी का रंग चढ़ने लगता था | हल्दी-कुमकुम का उत्सव जन-जन में प्रचलित हो रहा था जिसका श्रेय रानी को था | वह त्यौहार एकता और समन्वय का भी प्रतीक था | उत्सव का स्वभाव और उल्लास सभी को मुग्ध करनेवाला होता था | इसलिए उस दिन झाँसी में हर कोई

मन्त्र-मुग्ध होता था | शहर में तो वह खुशी का दिन होता था | रानी के विशेष बुलावे पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, मराठा तथा अन्य जातियों की सभी स्त्रियाँ आई | जाति धर्म का बिना ध्यान किए रानी ने उनकी आवभगत की | ऐसे रंग-बिरंगे अवसर पर झलकारी भी आयी थी | कुछ समय बाद घरानों की महिलाएँ जा चुकी थी | झलकारी ने भी अपनी सहेलियों के साथ महल में प्रवेश किया | उसने देखा सामने रानी खड़ी थी | नजदीक पहुँचकर उसने जोहार किया | परिचित आवाज सुन रानी का ध्यान भंग हुआ | उन्होंने देखा झलकारी सामने खड़ी थी | देखते ही पूछ बैठी, क्यों झलकारी, तुम इतने दिनों से क्यों नहीं आयी, क्या पतिदेव ने रोक लिया ? रानी के स्वर में उल्लास था | पर झलकारी तो उदास थी | क्या जवाब देती आखिर, फिर वह अपने स्वर को संयत करते हुए बोली, मौ से अपराध हो गयो | तो आपके पास कौन सा मौंह लेकर आती | रानी ने कहा था कि तुमसे कोई अपराध नहीं हुआ | तुम तो निर्दोष थी और निर्दोष हो | रानी की बात सुन थोड़ा धैर्य से बोली वह कि रानी साहिबा गोलो तो बछिया को लग गई थी | रानी ने कहा था कि बछिया को गोली तुमने जान-बूझकर मारी नहीं थी | रानी का स्वर उभरा था, फिर बछिया मरी भी नहीं | इस बार झलकारी के स्वर में थोड़ी सी खुशी भी थी | उसने कहा कि - पंचम ने दंड़ी बना दओ और परायश्चित भी हमय करना परौ | रानी ने जैसे दिलासा दिया, फिर कहा कि मैं जानती हूँ झलकारी |

कुछ पल वातावरण में चुप्पी रही | रानी ने धीरे से उसके कंधे पर हाथ रखा | झलकारी को जैसे बल मिला था | फिर पूछ बैठी की अच्छा यह तो बताओ कि तुमने जो अभ्यास किया था, वह भूल तो नहीं गई | सुनकर उत्तर में झलकारी ने कहा था कि- नई सरकार | रानी फिर गंभीर स्वर में बोली थी कि - "अंग्रेजों की आँखें हमारी झाँसी पर लगी हैं | अब वह दिन दूर नहीं जब हन सबको एक साथ युद्ध क्षेत्र में उतरना पड़ेगा |"[1] रानी की बात से उसे और ताकत मिली और अपने भीतर उत्साह का एहसास भी हुआ, उसके स्वर में तेजी आ गयी थी | उसने कहा कि - कैसी बातें कर रही हो रानी साहिबा | जहाँ तुम्हारा पसीना गिरे, वहाँ हम लहू बहा दे | उस समय आसपास खड़ी सभी सखियाँ एक साथ बोल उठी कि हम सब तैयार हैं | सुनकर खुश हुए

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.80

रानी ने कहा था, "शाबास झलकारी, तुमने तो रग-रग में खुन दौड़ा दिया | हमें तुम सबसे यही आशा थी "[1] इस बात से झलकारी के मन में रानी के प्रति जो मैल था वह धुल गया था | सच बात तो यह भी थी कि स्वयं रानी को भी झलकारी के साथ जो घटना हुई, उससे दुख हुआ था | पर वह मजबूर थी | एक ब्राह्मण को नाराज करने का अर्थ नगर तथा आसपास के समूचे ब्राह्मण समाज को नाराज करना था | जान-बूझकर इस तरह का खतरा रानी मोल लेना नहीं चाहती थी | ब्राह्मण वर्चस्व समाज में रानी की जगह कोई और भी होता तो वह भी वहीं करता |

रानी को देश पर आई विपत्ति का आभास था | वह अच्छी तरह समझती थी कि इस तरह की परिस्थितियों में उसे क्या करना था | एक-एक पल की खबर उसे रखनी पड़ती थी | अंग्रेजों की उस पर न जाने कब से आँखे लगी थी | स्वयं देसी रियासतदारों और रजवाड़ों का व्यवहार बदल गया था | वे भी झाँसी पर कब्जा करना चाहते थे | नगर में यह बात भली-भाँति महसूस की जाती थी कि अब झाँसी की रक्षा की जिम्मेदारी केवल रानी की ही नहीं थी बल्कि बच्चा-बच्चा झाँसी के लिए बलिदान देने को तैयार था | झलकारी को रानी ने जो जिम्मेदारी सौंपी थी उसे पूरा करने में वह जी जान से जुटी थी | उसे रानी ने झाँसी की लुगाइयन की फौज की कमांड़र फिर से बना दिया था | महिलाओं की इस फौज की कमांड़र दलित समाज की एक महिला को बनाना उस समाज के लिए प्रेरणा की बात थी | उसके साथ कोरी, काछी, चमार, बखोर, कड़ेरे, कुर्मी, कसाई, पासी आदि बहादुर जातियों की महिलाएँ झाँसी की रक्षा के लिए सजग होकर तरह-तरह के हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेने लगी थीं | उनके भीतर भी बलिदान देने की भावना थी और मर-मिटने का जज्बा भी था | यहाँ तक कि नगर की वेश्याओं ने भी वेश्यागिरी छोड़ सिपाहीगिरी अपना ली थी |

परिस्थितियाँ स्वयं बदलने लगी थी | व्यक्ति कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है | सच कहा जाए तो नए पूरा से रानी के महल तक झलकारी ने जोरदार दस्तक दी थी | उसकी गूँज हवेली-हवेली में होनी लगी थी | पर खास परिवार की महिलाएँ अभी भी व्यंग्य करती थी | दासियाँ-नौकरानियाँ को कोई कहती, अब तो कोरिनों का दिमाग भी सातवें आसमान पर हैं | तभी

---

1. मोहनदास नैमिशराय - विरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.81

कोई और खास महिला आते हुए सुन लेती तो वह भी सुनाए बिना रह न पाती, सातवें आसमान पर दिमाग क्यों न चढ़ें, बंदूकें लेकर क्षत्राणी जो बना दिया है इन कम्बख्तों को |

दलित पिछड़े समाज के मर्द औरतों में वह जोश दीपक के समान प्रज्वलित हुआ था | झलकारी को याद हो आया | गाँव में एक बार बौद्ध भिक्खू आए थे | उन्होंने कहा था, अपना दीपक आप बनो | सुबह का समय था | झलकारी घर में अकेली थी | तभी बाहर उसने आहट सुनी | उसने देखा आँगन में कोई साधू खड़ा था | झलकारी ने भी अब तक बाबा को पहचान लिया था | वही गंभीर आवाज, वही चेहरा | सहसा उसके मुँह से निकल पड़ा, "बाबा |" झलकारी तुरंत भीतर जाकर घड़े से गिलास में पानी के साथ गुड़ भी ले आई थी | खुशी से पहले बाबा ने पहले गुड़ खाया फिर पानी पिया था | बाबा इस बार लाल वस्त्रों में थे | जिज्ञासावश झलकारी पूछ बैठी | बाबा ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया था कि झलकारी, अब समय आ गया है जिस आदमी को देश से जरा भी प्यार है और देश के मान-सम्मान से जरा भी लगाव है, उसे सिर पर कफन बाँधना पड़ेगा | मैंने तो सिर से पाँव तक कफन पहन लिया है | झलकारी कुछ कहना ही चाहती थी कि बाबा यह कहते हुए चले गए. "झलकारी हमने जो कुछ दस बरस पहले कहा था तुमने वह कर दिखलाया | तुमने अब झाँसी का इतिहास बनाना शुरू कर दिया है |"[1]

शहरवालें महल के ठीक सामने राजकीय पुस्तकालय था | पुस्तकालय के पीछे एक ढ़ाल था और ढ़ाल के नीचे एक बड़ा बाग | इस बाग में रानी घुड़सवारी किया करती थी | सप्ताह में तीन-चार दिन स्वयं झलकारी अभ्यास के लिए जाती थी | उसके साथ राजकुमारी, कमला, उदया, चुन्नी, बिरमो, सुक्खो आदि सभी जाती थी | इसके अलावा परकोटे के बाहर रहनेवाली बस्तियों की महिलाएँ भी हथियार चलाना सीखने आती थी | सम्भ्रान्त घरों की स्त्रियाँ कम ही आतो थी | जहाँ आम वर्ग की महिलाएँ जाती हों, उसके बीच भला खास वर्ग की महिलाएँ क्यों जाएगी | जैसे जैसे युद्धाभ्यास बढ़ता था, रानी को यह सब रोमांचित करता था | उसके भीतर अंग्रेजों से युद्ध करने की इच्छा और बलवती होती जाती थी |

झाँसी तथा आसपास के गाँवों से सेना में भर्ती होने के लिए हर उम्र के लोग रानी

---

1. मोहनदास नैमिशराय - विरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र. 84

के पास आ रहे थे | रानी ने अस्थायी रूप में चार-पाँच सेनानायकों को इस काम की जिम्मेदारी सौंप दी थी | जिसमें पूरन को भी शामिल किया गया था | स्त्रियों की सेना में भर्ती के लिए झलकारी को यह उत्तरदायित्व दिया था | दलित और पिछड़े समाज के लोगों के बीच सेना में भर्ती के लिए होड़-सी लगी थी | सेना में भर्ती होना उनके लिए सम्मान का प्रतीक था | फिर देश की रक्षा करने का जज्बा उनके भीतर भी था | अंग्रेजों के खिलाफ उनके मन में न जाने कब से आग सुलग रही थी | अब तक वे अंगारा बन दहकने लगे थे | वे देश के काम आ जाए, इससे सार्थक बात और क्या हो सकती है |

जिस झाँसी की रानी को साम्राज्य से बेदखल कर अंग्रेजों ने आश्रयहीन कर दिया था, उन्हीं के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने का रानी के साथ झाँसी की जनता अब पूरी तरह से अपना मन बना चुकी थी | अंग्रेजों के साथ कागज और कलम की लड़ाई से अब कोई फायदा नहीं था | विलायत को अर्जियाँ भी भेजनी बेकार थी | उधर झाँसी में ही अंग्रेज सैनिकों के लिए बैरकें बनने का काम तेजी से आरंभ हो गया था | मजदूर किसान को जबरदस्ती पकड़कर अंग्रेजों के द्वारा सडक तैयार कराई जा रही थी | दलित मजदूर पिस रहा था | युद्ध की पूर्व प्रक्रिया से फसल नष्ट हो रही थी | इसके लिए अंग्रेजों के मन में जरा भी दर्द नहीं था | वे हर स्थिति से निपटने के लिए अपने आपको तैयार कर रहे थे | गोला-बारूद, हल्की तोपें, लंबी नलीवाली बंदूकें, कारतूस सभी कुछ इकट्ठा करने की मुहिम में वे लगे थे | उनके देसी जासूस झाँसी राज्य में बिखरे थे, जो रानी की गुप्त खबरें अंग्रेजों को दिया करते थे |

रानी के भीतर अब कोई द्वंद्व न था | स्थिति साफ थी और उनके द्वारा लिया गया निर्णय भी स्पष्ट था | कुछ वर्ष पूर्व झाँसी सरकार के जो सैनिक बर्खास्त होकर घर पर बैठे हुए थे उन्हें पुन: बुला लिया गया था | सेना में विश्वास और निष्ठा जताने का काम सबसे पहले था | रानी ने राज्य शासन और युद्ध की तरफ गंभीरतापूर्वक ध्यान देना शुरू कर दिया था | 1857 वर्ष का आकाश तेजो के साथ सूर्ख खून में बदलता जा रहा था | छुटपुट घटनाएँ होने लगी थीं | जो इस बात का प्रतीक था कि विद्रोह कभी का फुट चुका था | झाँसी में भी इसका प्रभाव हुआ था | अंग्रेजों के खेमे में खलबली थी और घबराहट भी |

एक दिन ऐसा भी आया जब रनभेरी बज उठी | झलकारी तो युद्ध क्षेत्र में उतरने को लालायित थी | 10 मई, 1857 को मेरठ छावणी में भारतीय सैनिकों ने जो विद्रोह की शुरूआत की थी उसकी चिंगारी झाँसी में भी पहुँची | ऐसे समय पर पूरन कोरी और भाऊ बख्सी ने विद्रोह का संचालन किया | इस समय झलकारी बाई भी अपने पति के साथ अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए तत्पर हो उठी थी | मेरठ और दिल्ली के सिपाहियों के सहयोग से कानपुर और झाँसी स्वतंत्र हो गए | झाँसी की बागड़ोर महारानी लक्ष्मीबाई के हाथ आ गयी |

6 जून, 1857 को झाँसी में विद्रोह भड़क उठा | पूरन कोरी और भाऊ बख्सी तथा बख्सी अली दरोगा ने खजाने और शस्त्राधार पर अधिकार कर लिया | उन्होंने झाँसी किले को घेर लिया | झाँसी में 5 जून से 8 जून तक पूरन कोरी और भाऊ बख्सी का झंड़ा लहराता रहा | झाँसी में अंग्रेजों के सीने पर विद्रोहियों की यह जोरदार दस्तक थी | ऐसा आभास अंग्रेजों को न था | इस ऐतिहासिक घटना ने ब्रिटिश सैनिकों को ज्यादा निर्दयी होने के लिए उत्तेजित ही किया था | दतिया और ओरछा झाँसी राज्य को परास्त करने के अवसर की तलाश में थे | रानी इसे अच्छी तरह से जानती थी |

झाँसी में रह रहे कुछ अंग्रेज अधिकारी, सैनिक भागने में सफल हो गए थे | लेकिन युद्ध का कहीं अंत न था | महल के भीतर-बाहर सभी जगह जंग छिड़ी थी | ऐसे में पूरन कोरी और भाऊ बख्सी अंग्रेजी सेना को परास्त करने में जी-जान से जुटे थे | सभी फाटकों पर तोपची और बंदूकची अपना जौहर दिखा रहे थे | रानी बड़ी ही चुस्ती से हर फाटक की निगरानी कर रही थी | वह पश्चिमी पर पहुँची और गुलाम गौश को उसने शाबाशी दी, फिर दक्षिण बुर्ज से होती हुई उत्तरी बुर्ज पर आयी | झलकारी पूरन अब भी अपने मोर्चे पर डटे भीषण आग दुश्मनों पर उगल रहे थे | रानी उन दोनों के उत्साह को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई | पूरन को शाबशी दी और झलकारी की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली, "झलकारी तुमने बड़ी मेहनत की, बड़ी बहादुरी से पूरन का साथ दिया |"[1]

अवसर देख अंग्रेजों की सेना चारों ओर से झपटी | सैंयर फाटक 'दक्षिणी पर

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.92

हमला हुआ, परंतु खुदाबख्स ने डटकर मोर्चा लिया | गोरे सैनिक पीछे हटे फिर उत्तरी फाटक पर हमला हुआ, परंतु झलकारी पूरन के नेतृत्व में दलित-पिछड़ी जाति के लोगों ने अपनी जबरदस्त मार से दुश्मन के सैनिकों को पीछे हटा दिया | इसी बीच अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी ने छिपकर हमला किया, कुछ उन्नाव बुर्ज की दीवार के पास तिरछे आते दिखाई दिए | अबकी उनके हाथों में बंदूकें, सीढ़ियाँ और रस्सियाँ थी | अचानक झलकारी की उनपर नजर पड़ी | झलकारी फुर्ती से नीचे आई | सभी जाति की स्त्रियों को इकट्ठा किया और बोली, "अब गोरा भीतरैं आउन चात | हमाई दीवाल सै भीतरै जैसे | हमाई इज्जत मट्टी में मिल जै | आज बताउनैं कि बुन्देलन की जनी परान दै के झाँसी के रच्छा कर है | हुपक हाँत्न लै लो, सूद मिल लौ, अपनी लाठियाँ निकाल लो | कंड़न जैसे दुश्मन की मुंड़ी फोर दौ खारिहान सौं बिछा दो एक गोरा लौत के न जा पाउ न ऊपरें आन पाड़ने |"[१]

झलकारी की जोशीली वाणी ने स्त्रियों के रक्त को खौला दिया | उसके एक-एक शब्द तीर की तरह उनके हृदय में चुभ गए | फिर क्या था ? जिसके पास बंदूकें थीं, उन्होंने औत लेकर निशाना बाँधा | बाकी ने ईंट-पत्थरों का प्रयोग किया | देखते ही देखते अंग्रेजी सेना की तरफ धड़ाधड़ ईंट, पत्थरों तथा गोलियों की बौछार शुरू हो गयी | झलकारी औत लेती हुई आगे-पीछे बराबर आ रही थी | भांड़ेरी गेट से लेकर उन्नाव गेट तक युद्ध का संचालन स्वयं झलकारी बाई कर रही थी | उसने तोपखाने को भी सँभाल रखा था | जबकि उसके पति पूरन कोरी और भाऊ बख्सी आदि दूसरी जगह पर अंग्रेजों से लोहा ले रहे थे |

तभी पूरन कोरी अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हो गए | झलकारी ने देखा कि जमीन पर रक्त में डूबा अपने पति का शव पड़ा था | भारतीय नारी का पति ही सर्वस्व होता है | ऐसे विकट समय पर उसने कहा था, "झाँसी कै लाने मोय से पैले तुमने परान दे दय |"[२] भाव तन्द्रा भंग होते ही अपने पति के चरणों को स्पर्श कर तेजी से उछलकर घोड़े पर सवार हो कुछ ही दूरी पर चल रहे युद्ध में अंग्रेज सेना पर घायल सिंहनी की भाँति टूट पड़ी | उसे अपने

1. मोहनदास नैमिशराय - विरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.94
2. वही - पृष्ठ क्र.94

पति के युद्ध में मारे जाने का दुख नहीं था, अपितु झाँसी की सुरक्षा की चिन्ता थी |

चारों ओर आग की लपटें थीं | झाँसी की फौज दुश्मन पर भारी पड़ रही थी | स्त्रियों ने चूडियाँ तोड़कर हथियार सँभाल लिए थे | यह सीख उन्हें झलकारी ने दी थी | उनके सामने एक ही उद्देश्य था और वह था दुश्मन को मार गिराना | वे पीठ दिखाकर मरना नहीं चाहती थी | लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त होने की उनमें ललक थी | जुनून था उनके भीतर | वहीं जुनून उन्हें आगे बढ़ने में मदद कर रहा था | झाँसी की सड़कों पर खून ही खून बह रहा था | लोग मर-कट रहे थे | तलवारें टकराने और गोलियाँ छूटने की आवाजें आ रही थी | नदी, नाले, टोरिया, सडकें, किले की दीवारें, महल के बुर्ज, दरवाजें, खिड़कियाँ सभी तो खून से लाल होने लगे थे | कौन लिखेगा इनका इतिहास, इन सबकी चिन्ता किसे थी | परवाह थी तो बस झाँसी के मान सम्मान की |

दूसरी तरफ झलकारी को चिन्ता थी तो रानी के मान-सम्मान की | उसकी निगाह झाँसी और रानी में कोई फर्क न था | रानी के वफादार सैनिकों की संख्या तेजी से घट रही थी | सबकी राय बनी की रानी को झाँसी से निकल जाना चाहिए | चंद्रमा निकलने के कुछ देर पहले ही चुपचाप रानो की अत्यंत प्रसिद्ध घोड़ी सारंगी को लाया गया | उत्तर दिशा के दरवाजे से होकर रानी अपने निकटतम वफादार साथियों के सथ निकल गयी | जिस समय रानी दामोदर को घोड़े की पीठ से बाँध किले से बाहर निकली, सारा झाँसी शहर धू-धू-कर जल रहा था |

झलकारी के सामने अब एक ही रास्ता था | जैसे भी हो गोरों का ध्यान रानी से हटाया जाए और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को बचाया जाए | जनरल ह्यूरोज कैम्प में ही था | गोरे सैनिक बाहर पहरे पर थे | वहाँ पहुँचकर उसने घोड़े की लगाम खींची | गोरे सैनिक ने हड़बड़ाहट में पूछा, "टुम कौन हाय ?" झलकारी ने उत्तर दिया था, रानी | पुनः पूछा था उसी सैनिक ने, कौन रानी ? झलकारी वैसे ही स्वर में बोती थी, झाँसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई | तभी झलकारी ने आदेश देने जैसे स्वर में कहा कि इम तुम्हारे जनरल को अभी इधर इसी बखत मिलना माँगता | जनरल ह्यूरोज और स्टुअर्ट धोके में आ गए | लेकिन दुल्हाजू ने झलकारी को देख लिया था | यह वहों दुल्हाजू था जिसने ओरछा फाटक खोलकर अंग्रेजी सेना को भीतर आने का अवसर

दिया था | झलकारी ने भी उसकी आँखों में आँखें गड़ा दी थी | दुल्हाजू की आँखों में कहीं शर्म हया न थी | झाँसी के इतिहास में वह पुन: खलनायक बनकर उपस्थित हुआ था | बिना एक पल गँवाए उसने ह्यूरोज से कहा था, "सरकार यह रानी नहीं है |" ह्यूरोज ने सुना तो आश्चर्य में भर उठा | "फिर कौन हाय ?" वैसे ही स्वर में बोला था कि सरकार, इसे मैंने रानी के पास कई बार देखा था | दुल्हाजू जैसे गद्दार को छावणी में देख झलकारी का खून खौल उठा | उसकी ओर बढ़ते हुए वह गरज उठी कि - "अरे पापी, तैं ठाकुर होके याई का करौ | तैं पैदा होतई मर कौ नई गयौ |"[१] रानी का नमक खाकर गद्दारी की | तभी ह्यूरोज ने क्रोध में कहा कि, "तुम रानी नहीं हाय, टुम झलकारी हाय | हम टूमको गोली मार देगा |" सुनकर तड़प उठी थी झलकारी | निर्भयता से वह फिर गरजी थी कि, "मार दैव गोली, मोखौं मौत से ड़र नई लगै |"[२] ह्यूरोज को उसकी वीरता पर आश्चर्य हुआ | ह्यूरोज ने स्टुअर्ट को कहा था कि, अगर हिंदुस्टान की हर एक लड़की भी इसी लड़कि की तरह दीवानी हो गयी, टो हम सबको यह ड़ेश छोड़ भागना पड़ेगा |

ह्यूरोज झलकारी की वीरता से प्रसन्न हुआ और सैनिकों को छोड़ देने का आदेश दिया | झलक्कारी वापस बस्ती में आई तो किसी को विश्वास नहीं हुआ कि अंग्रेजों के बीच छावणी से वह जिंदा वापस भी लौट सकती है | झलक्कारी को जीवित बचकर आने की कोई खुशी न थी | दुख था तो केवल झाँसी अंग्रेजों के प्रभूत्व में चली गयी थी | इतिहास के इस मोड़ से उसकी जीवनधारा बिल्कुल ही बदल गई थी | उसने फिर से बिखरे हुए लोग-लुगाइन की सेना बनाई | झाँसी को अंग्रेजी सेना से आजाद कराना उसका उद्देश्य था |

❖ निष्कर्ष :

मोहनदास नैमिशराय जी ने 'मुक्तिपर्व' के माध्यम से संघर्षशील दलित परिवार का चित्रण करके दलितों में चेतना जागृत करने का प्रयास किया है | आजादी मिलने पर भी दलितों को न्याय नहीं मिलता | नवाब साहब, जमींदार, जागीरदार दलितों को आजादी नहीं देना चाहते |

1. मोहनदास नैमिशराय - वीरांगना झलकारी बाई, पृष्ठ क्र.99
2. वही - पृष्ठ क्र.99

उन्हें देश और समाज को मिली आजादी सुहाती नहीं थी, क्योंकि दलित देश आजाद होने पर जागृत हो गए थे | लेखक ने शिक्षा के माध्यम से दलितों की समस्याओं को हल करने का संदेश दिया है | जो डॉ.अम्बेड़कर के गुलामी से मुक्ति हेतु मूलमंत्र के विचारों को उजागर करते हैं |

अंत में कहना गलत न होगा कि डॉ.अम्बेड़कर जी ने 'शिक्षित बनो, संगठित हो एवं संघर्ष करो' का मूलमंत्र दलितों को दिया है | उसी से प्रेरित होकर आज दलित शिक्षा के माध्यम से समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहे हैं | वे अज्ञान, अशिक्षा एवं अंधविश्वास को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते हैं | दलित गुलामी को ठुकराकर अपने अधिकारों के प्रति चेतित हो गया है | मोहनदास नैमिशराय जी का 'मुक्तिपर्व' उपन्यास दलित समाज को प्रेरणादायी होगा इसमें संदेह नहीं है |

'वीरांगना झलकारी बाई' में मोहनदास नैमिशराय जी ने 1857 के उन स्वतंत्रता सेनानियों को याद दिलाया है, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी | झलकारी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी | उसने स्वातंत्र्य संग्राम में एक घायल सिंहनी की भाँति अंग्रेजों का सामना किया | झलकारी बाई दलित-पिछड़े समाज की थी और वह निस्वार्थ भाव से देश-सेवा में रही | तत्कालीन समय में जातियाँ हाशिये पर थी, पर उसने देश की विपत्ती में निस्वार्थ भाव से जान की परवाह किए बगैर संघर्ष किया | वीरांगना झलकारी बाई स्वतंत्रता सेनानियों की उसी श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी रही है | लेकिन दुख की बात यह कि जाति-विशेष के चष्माधारी इतिहासकारों, साहित्यकारों और पत्रकारों में से किसी ने भी दलित समाज की उस वीरांगना झलकारी बाई की खबर नहीं ली थी | उसे नैमिशराय जी ने केंद्र में लाने का प्रयास किया है |

भोजला गाँव में जन्मी झलकारी ने स्वातंत्र्य संग्राम में बहुमोल योगदान दिया | झलकारी ने बचपन में बाघ मार दिया था | लेकिन ऊँची जातियों के लोग उसे आसानी से स्वीकार नहीं करते | वह उसके प्रति ईर्ष्या करते हैं | तत्कालीन समाज जातीयता के आधार पर विभक्त था | झलकारी का गौरव करने के बजाय वे उसका उपहास करते हैं | हिंदू समाज में जाति विरासत में दलितों को सहनी पड़ती थी | तथाकथित सवर्ण दलितों की परछाइयों से भी दूर रहते थे |

दलितों को जानवरों से बदतर जिंदगी मिली थी | दलित समाज के लोग मजबूर थे | बोलने पर उन्हें दंड़ सहना पड़ता था | दुनिया के विधानों से अलग विधान थे इस धरती पर | मोहनदास नैमिशराय जी ने इन प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है |

तत्कालीन समाज में महिलाओं में हथियार चलाने की कहाँ परंपरा थी | लेकिन झाँसी की रानी ने इसका दर्शन उलट दिया था | उन्होंने दलित समाज की एक महिला को महिला सेना का कमांड़र बना दिया था | दलित समाज के लोग साहसी थे और बहादुर भी, लेकिन उनकी पहचान बने, ऐसा सवर्ण समाज नहीं चाहता था | झलकारी बचपन से ही वीर और साहसी थी | सैनिकों को वर्दी में देखा तथा युद्ध का डंका बजते हुए सुनकर उसकी भुजाएँ भी रणक्षेत्र में जाने को फड़कने लगती थी | देश प्रेम की ज्वाला धधकने लगी थी |

जिस दिन स्वतंत्रता संग्राम की आग भड़की थी, तब झलकारी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी | वह उत्तरी बुर्ज पर से भीषण आग उगल रही थी | वह समय-समय पर महिलाओं को प्रेरित करती थी | जब पूरन अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हो गए तब वह घायल सिंहनी की भाँति अंग्रेजी सेना पर टूट पड़ती है | जब रानी उत्तर दिशा से होकर निकल जाती है तब रानी को बचाने के लिए एवं अंग्रेजों को धोखे में रखने के लिए अंग्रेजों की छावणी में जाती है | लेकिन दुल्हाजु द्वारा उसका भेद खुल जाता है | फिर भी निर्भयता से अंग्रेजों का सामना करती है | ह्युरोज झलकारी की वीरता से प्रसन्न होकर छोड़ देता है | झलकारी को जीवित बचकर आने की कोई खुशी न थी | दुख था तो केवल झाँसी अंग्रेजों के प्रभुत्व में चली गयी थी | वह पीठ दिखाकर मरना नहीं चाहती थी | लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त होने की उसमें ललक थी | जुनून था उसके भीतर | वहीं जुनून उसे चूप बैठने नहीं देता था | उसने फिर से बिखरे हुए लोग-लुगाइन की सेना बनाई | झाँसी को अंग्रेजी सेना से आजाद कराना उसका उद्देश्य था |